समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

मई २००४ ♦ वर्ष ५४ ♦ अंक ५ ♦ एक प्रति १० रुपए ♦ वार्षिक १०० रुपए

डा. मनमोहन सिंह
देश के नये प्रधानमंत्री

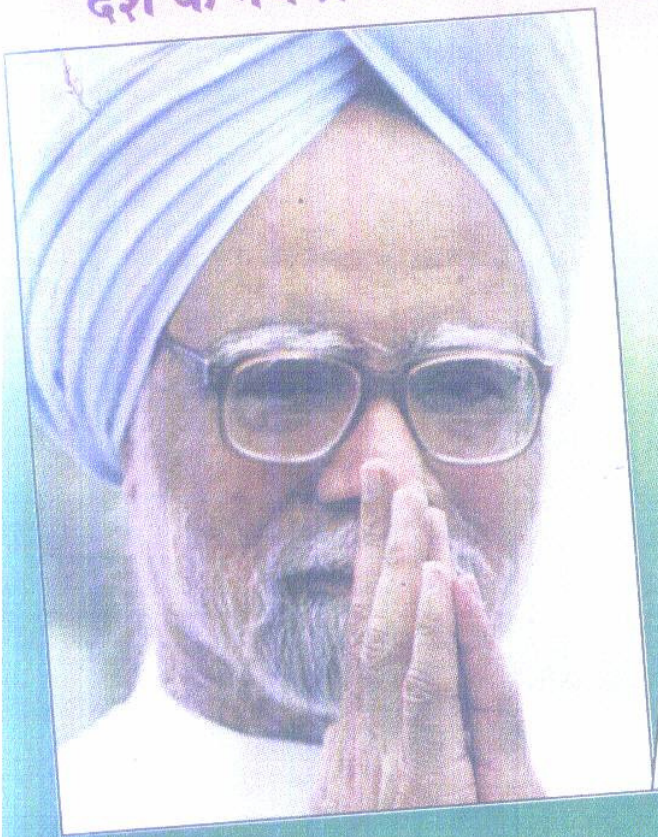

श्रीमती सोनिया गाँधी
संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की अध्यक्षा

With best compliments from

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Exporters & Manufacturer of Sponge-Iron

RUNGTA HOUSE
Chaibasa – 833 201
Jharkhand, India
Phone: (06582) 256861,256761, 256661
Cable: Rungta
Fax : 91-6582-256442
E-mail : rungtas@satyam.net.in
Website:http://www.rungtamines.com

Mines Division :

Barajamda – 833 221
Dist. Singhbhum (W)
Jharkhand, India
Phone : (06596) 262221, 262321
Fax: 91 – 6596 – 262101
Cable : Rungta

Regd. Office:

8A, Express Tower
42A, Shakespeare Sarani
Kolkata – 700 017, India
Phone : 033 - 2281 6580, 22813751
Fax : 91-33- 2281 5380
E-mail : rungta_cal@sify.com

Sponge –Iron Division

Main Road,
Barbil – 758 035
Dist. Keonjhar
Orissa, India
Phone : (06767) 276891
Telefax : 91- 6767- 276891

इस अंक में

अनुक्रमणिका	३
जनवाणी	४
उपाध्यक्ष एवं महामंत्री को प्राप्त बधाई संदेश	५
अध्यक्ष की कलम से / *श्री मोहनलाल तुलस्यान*	६
मनमोहन ने बाजार को मोहा / श्री सीताराम शर्मा	७-८
मतभेद को मनभेद न बनने दें / श्री भानीराम सुरेका	९
भगिनी निवेदिता से सोनिया गांधी तक / श्री श्यामसुन्दर पोद्दार	१०-११
समाज इकाई मूलभूत प्रश्न... / स्व. पुरुषोत्तम हलवासिया	१२
धर्म के नाम पर बढ़ा पाखंड / श्री विश्वनाथ सराफ	१३
राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता का प्रश्न / डॉ. वेंकट शर्मा	१४-१७
नारी स्वतंत्रता : सीमायें एवं उपयोग / श्री भीमसेन त्यागी	१८
अवकाश के महत्व : ऊंचाइयां छूने का माध्यम / श्रीमती ज्ञानवती लाठ	१९-२१
संकल्प शक्ति के चमत्कार / श्री पुष्कर लाल केडिया	२२-२३
चुनाव / कविता / श्री जयकुमार रुसवा	२३
विष्णुजी-लक्ष्मीजी को झगड़ो / श्रीमती कुसुम खेमाणी	२४
सुपुत्र-कुपुत्र सभी पूर्व कर्मों का फल / श्री शिवचरण मंत्री	२५
अतिरेक मानव / डा. मंगला प्रसाद	२६

युग पथ चरण

★ पूर्वोत्तर, उत्कल, बिहार आदि विभिन्न प्रांतों से सम्मेलन के क्रिया-कलापों की खास-खास खबरें।

★ अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन एवं मारवाड़ी युवा मंच की महत्वपूर्ण रिपोर्टें।

२७-३४

समाज विकास

वर्ष ५४ ● अंक ५

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।

२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।

३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।

४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।

५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।

६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।

७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।

८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

ग्राहक बनिये / बनाइये
लिखिये / लिखाइये

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता-७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

ज न वा णी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है।

- सम्पादक

सम्पादक श्री नन्दकिशोर जालान के दिशा निर्देशन में प्रकाशित होने वाला मासिक मुखपत्र 'समाज विकास' में अच्छी सामग्री छप रही है। इस पत्रिका के मार्फत पूरे भारत में प्रवासी राजस्थानी बंधुओं की गतिविधियों की जानकारी मिल रही है। आपकी सूझबूझ एवं मेहनत रंग ला रही है।

- लक्ष्मणदान कविया,
प्रदेश महामंत्री, अखिल भारतीय
राजस्थानी भाषा संघर्ष समिति, नागौर

जालानजी का स्नेह भरा पत्र मिला, मन गदगद हुआ, कोटीश: धन्यवाद।

अपने मन में तो बस एक ही भावना है
ललक है मन में सेवा व्रत का
भारत का होवे सम्मान

इसी ललक के साथ मेरी इच्छा है उड़ीसा के पश्चिमांचल क्षेत्र में समाज के प्रचार प्रसार एवं विकास के लिए मुझे जो भी दायित्व संगठन के द्वारा सौंपा जायेगा उसे मैं अपना अहोभाग्य समझते हुए पूरे मनोयोग से निभाने की चेष्टा करूंगा। हम तो बस हनुमान हैं आप राम हैं, जो आज्ञा हो मुझे स्वीकार है।

श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल (अधिवक्ता) टिटलागढ़ के मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष चुने जाने तथा नवभारत के जिला प्रतिनिधि व समाजसेवी श्री मोहनलाल अग्रवाल के जी न्यूज के बलांगीर और कालाहांडी जिलों के रिपोर्टर नियुक्त होने एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री वेदप्रकाश अग्रवाल के राष्ट्रीय (साप्ताहिक) के बलांगीर जिला संवाददाता की नियुक्ति पर विभिन्न संगठनों ने हार्दिक बधाई दी है।

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री किशनलाल अग्रवाल, सचिव श्री गौरीशंकर अग्रवाल, जिला सभापति श्री हरिनारायण जैन पटनायक, शाखाध्यक्ष श्री पृथ्वीराज जैन, श्यामसुन्दर अग्रवाल (सोनपुर) गोविन्दराम अग्रवाल (तरमा), जशकरण अग्रवाल (वैलपाड़ा) मदनलाल आर्य कांटाभांजी, चिरंजीलाल अग्रवाल, बंगोमुंडा, गौरीशंकर जैन (सिंधीकेला), सूरजभान जैन, (टिटलागढ़), अर्जुन अग्रवाल (सांतेला), गिरधारीलाल केडिया (तुषरा), रामोतार अग्रवाल (लोईसिंगा), सीताराम अग्रवाल (लाटोर) ने भी बहुत-बहुत बधाई दी है।

- गौरीशंकर अग्रवाल,
बलांगीर, उड़ीसा

५४वें बरस रो अंक मिल्यों जी, मन सोरो हुओ। लखदाद है आप लोगां नै कि आप इतणे बरसां सूं मारवाड़ी समाज री शीर्ष पत्रिका नियमित निकाल रैया हो। विविध सामग्री सूं भरपूर ओ छापो समाज रो दिसा सूचक भी है। सारै मारवाड़ी समाज को लेखो जोखो लोगां वास्तै प्रेरणादायी बनरयो है। इतनो लूंठों और स्थापित पत्र है प्रवासण साख आपनै मौकलो धन्यवाद। म्हारो एक सुझाव है आप मानों तो राजस्थानी भाषा रो भला होसी, एक स्थायी स्तंभ राजस्थानी को निकालो जिसमें कविता, कहानी, व्यंग्य, नाटक आदि विधावा सामिल करी जावां।

- नागराज शर्मा, पिलानी

समाज विकास हमें लगातार मिल रही है। प्रवासी राजस्थानी भाईयों के लिए बड़ी उपयोगी सामग्री है। लगभग १० करोड़ राजस्थानी भाईयों को संगठन एवं सांस्कृतिक सूझबूझ की शिक्षा मिलती है। राजस्थान की विधानसभा का प्रस्ताव अब केन्द्र सरकार द्वारा पारित कराने का प्रयास करें। हमारे नये अध्यक्ष डा. देवकोठारी जी इस बाबत सक्रिय हैं।

पृथ्वीराज, बीकानेर

समाज विकास अप्रैल २००४ अंक में जनवाणी में एक कविता छापी गयी है। शायद यह कविता अम्बू शर्मा द्वारा सुरेका परिवार के उपलक्ष्य में लिखी गयी होगी। समाज विकास से इसका कोई सीधा संबंध नहीं है। इस तरह की चाटुकारिता भरी कविता अम्बू शर्मा जी ही लिख सकते है। आपके सम्पादन में छप रही पत्रिका के स्तर के अनुरूप नहीं है।

- सुनील कुमार जवानपुरिया,
जगसलाई, टाटानगर

सम्पादकीय : यह कविता श्री सुरेकाजी के महामंत्री चुने जाने के बाद प्राप्त हुई थी एवं तदर्थ प्रकाशित की गई थी।

अप्रैल २००४ अंक में महामंत्री श्री भानीराम सुरेका का समाज के बंधुओं से अपील शिक्षा को बढ़ावा के बारे में पढ़े जो बहुत ही प्रशंसनीय है। पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। इसका समाज में सबको मिलकर विरोध करना चाहिए। तंब आगे चलके समाज में कुछ परिवर्तन आ सकते हैं। तभी समाज में सुधार हो सकती है। आप समाज के मार्ग-दर्शक है। आपका विचार समाज के प्रति सामाजिक एवं ज्ञानवर्द्धक लेखों के संकलन हेतु बधाई के पात्र है। आपकी कर्मठता, कटिबद्धता एवं समर्पण भावना समाज विकास के प्रति निरंतर प्रगति पथ पे ले जा रही है। आपने जो लिखा कि बैण्ड बाजा, भौंडानाच, आतिशबाजी, शादी-ब्याह में ऐसे मौके समाज के लिए ठीक नहीं है, ये बहुत ही अच्छी बात है।

समाज में एक नियम बना लेना चाहिए कि आगे कोई भी शादी ब्याह में नाच गाने के समय लक्ष्मी रूपी रुपया को फेंका न जाए। इस नियम को समाज से बिल्कुल उठा देना चाहिए। मद्यपान पर भी पाबंदी लगा देनी चाहिए क्योंकि लक्ष्मीजी का पूजन लक्ष्मीजी के हिसाब से होना चाहिए। उनका अपमान नहीं होना चाहिए। रुपयों को जमीन में फेंका न जाना चाहिए। जो व्यक्ति ऐसा करता है समाज को उसके ऊपर कड़ी से कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए तब जा के समाज सुधार हो सकता है। जहां तक हो सके दिन में शादी-ब्याह करनी चाहिए। कम से कम बारातियों का मेजबानी होना चाहिए एवं नाच-गाने चौराहे पर न होकर अपने पूरे परिवार के साथ मण्डप में तथा परिवार के सदस्यों द्वारा हो तो बहुत ही अच्छा रहेगा एवं आनन्द उल्लास के साथ बारातियों के साथ परिवार के लोगों की एक नई पहचान बनेगी और शोभा देगी। माहौल खुशी से दूना आनन्द देगा। पुरानी पीढ़ी में ये सब नहीं थीं, क्योंकि पुरानी पीढ़ी में बुजुर्गों का बहुत ही सम्मान होता था एवं नई पीढ़ी में बुजुर्गों को छोड़कर केवल नवयुवक ही नजर आते हैं तो सम्मान कहां से मिलेगा। बुजुर्गों का बोला हुआ बचन एवं उनकी संस्कारियता, उनकी शिक्षा, आज भी हम निभा रहे हैं। आगे भी निभायेंगे एवं बच्चों को भी समाज में संकल्प करवाएंगे। बुजुर्ग समाज के लिए एक ज्वलंत उदाहरण है। वे पारिवारिक और सामाजिक पंच की भूमिका में होते थे।

- शिवशंकर अग्रवाल,
बलांगीर (उड़ीसा)

सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा को प्राप्त बधाइयां

यह जानकर अति हर्ष हुआ कि श्री सीताराम शर्मा इस बार के अति संघर्षपूर्ण चुनावों में विजयी हुए है। यह आपकी कार्य कुशलता और सामाजिक स्नेह का प्रतीक है। आप जैसे कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं नेता की ही समाज में विकास हेतु आवश्यकता है जो कि समाज को विकास और समृद्धि की चरम सीमा तक ले जा सके। ईश्वर आपकी तमाम सफलताओं में पथ-प्रदर्शक बनें। जिस प्रकार सूर्य अपनी तेजोमय किरणों से सम्पूर्ण दिशाओं को प्रकाशित करता है उसी तरह आपकी उज्वल कीर्ति सारे समाज को प्रकाश की दिशाओं की ओर मार्गस्थ करें।

- श्री पोपटलाल ओस्तवाल, पूणे, महाराष्ट्र

मेरे बाहर रहने से मुंबई अधिवेशन में नहीं पहुंच सका। आपका कार्यकाल अपने सम्मेलन के लिए सबसे महत्वपूर्ण रहा है कि सम्मेलन का अपना भवन हो सका इसके लिए बधाई। आपके उपाध्यक्ष पद पर निर्वाचन के लिए बधाई व मंगलकामना। आशा है आप सम्मेलन को समाज में एक गरिमामय ऊंचाई तक पहुंचा सकेंगे।

- श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता व समस्त गुप्ता परिवार

समाज सेवा के क्षेत्र में श्री सीताराम शर्मा द्वारा प्रदत्त उत्कृष्ट सेवाओं का लाभ निश्चित रूप से हम सभी ने उठाया है। समाज को आप जैसी विभूतियों पर गर्व है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष चुने जाने पर हमारी असीम शुभकामनाएं स्वीकार करें। ईश्वर आपमें ऐसी ऊर्जा का विस्तार करता रहे ताकि समाज आपके सुंप्रयासों से अधिकाधिक लाभान्वित होता रहे।

- श्री गौरीशंकर अग्रवाल, अध्यक्ष,
उत्कल प्रा.मा.स., बलांगीर, उड़ीसा

यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि श्री सीताराम शर्मा अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर निर्वाचित किए गए हैं, इस उपलक्ष्य पर सम्मेलन परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं मंगलमय शुभकामनाएं स्वीकार करें। जहां एक ओर महामंत्री के रूप में आपका प्रशंसनीय कार्यकाल रहा है, आशा है कि राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के तौर पर और भी सफल एवं रचनात्मक सिद्ध होगा। पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन सदैव आपके साथ है, किसी प्रकार की आवश्यकता होने पर हमें नि:संकोच सूचित करें। पुनश्च हार्दिक बधाई।

- श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल, महामंत्री,
पूर्वोत्तर प्रा.मा. सम्मेलन, गुवाहाटी, असम

बहाना तो लोग समस्याओं का व्यस्तता का सब बनाते हैं। श्री सीताराम शर्मा व्यस्त होते हुए भी आगे बढ़ते गये, कारवां बनाते गए मेरी बधाई स्वीकार करेंगे।

- श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल, पूर्व राष्ट्रीय
उपाध्यक्ष, मोतीपुर, मुजफ्फरपुर, बिहार

श्री सीताराम शर्मा के ऐतिहासिक कार्यकाल में यों तो अनेकों उपलब्धियां हुई हैं किन्तु आपके चिर स्मरणीय सराहनीय कार्य आपके अथक प्रयास से सम्मेलन के लिए कोलकाता महानगरी के प्रमुख शानदार स्थल पर भवन निर्माणार्थ विशाल भूमि का क्रय कर एक नया इतिहास रचकर समाज के लिए प्रेरणादायक कीर्तिमान स्थापित किया है। हमें आपके नेतृत्व में पूर्ण आस्था है। साथ ही आप महानुभाव से अनुरोध है कि हमारे समाज के सभी वर्ग के लोग शिक्षित हो सकें इसके लिए हमें पूरे भारतवर्ष में दिशा-निर्देश व जागृति लानी होगी। हमें आशा है इस पुनीत कार्य हेतु आप अपने स्तर से प्रयास व दिशा-निर्देश जारी करेंगे।

- श्री प्रह्लाद शर्मा, सचिव,
बिहार मा.स. शिक्षा समिति, पटना, बिहार

मुझे मार्च महीने की समाज विकास पत्रिका मिली। इस पत्रिका के पढ़ने से मालूम हुआ कि श्री सीताराम शर्मा का मुंबई के बीच केन्डी अस्पताल में बाईपास सर्जरी का आपरेशन सफल हुआ है। सो आपको मुंबई में आपरेशन के समय कलकत्ते से सर्वश्री तुलस्यानजी, विश्वम्भर नेवर तथा भानीराम जी सुरेका इत्यादि देखने को गये थे। आपका आपरेशन सफल हुआ, बड़ी खुशी की बात है। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि आप पूर्णतया स्वस्थ होकर कलकत्ता लौटे।

- श्री श्यामलाल डोकानिया, कोलकाता

श्री सीताराम शर्मा का मुस्कुराता चेहरा, धारा प्रवाह वक्तृत्व क्षमता एवं प्रेरणादायक लेखन मेरे स्मृति पटल पर सदैव अंकित रहेंगे।

- श्री गौरीशंकर सिंहानिया, कोलकाता

सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका को प्राप्त बधाइयां

महामंत्री पदासीन हो गये जानकर अतिशय सुख का अनुभव हुआ। श्री भानीराम सुरेका को राष्ट्र का प्रधानमंत्री तो समाज ने चयन किया लेकिन इसके गुरुतर दायित्व का निर्वहन भवन निर्माण से लेकर संगठन की पूर्णरूपेण मजबूती देने का करने से ही होगा। मेरी समस्त शुभकामना है और पूर्ण सहयोग आपको मिलेगा।

- नारायण प्रसाद अग्रवाल,
पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

यह जानकर अति हर्ष हुआ कि श्री भानीराम सुरेका इस बार के अति संघर्षपूर्ण चुनावों में विजयी हुए हैं। यह आपकी कार्यकुशलता और सामाजिक स्नेह का प्रतीक है। आप जैसे कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं नेता की ही समाज में विकास हेतु आवश्यकता है, जो कि समाज को विकास और समृद्धि की चरम सीमा तक ले जा सके। ईश्वर आपकी तमाम सफलताओं में पथ प्रदर्शक बने। जिस प्रकार सूर्य अपनी तेजोमय किरणों से सम्पूर्ण दिशाओं को प्रकाशित करता है उसी तरह आपकी उज्ज्वल कीर्ति सारे समाज को प्रकाश की दिशा की ओर मार्गस्थ करे।

- पोपटलाल ओस्तवाल, पूणे

सही लोकतंत्र की स्थापना के लिए प्रयास हो

✍ मोहन लाल तुलस्यान

परिवार, समाज और राष्ट्र में लोकतांत्रिक व्यवस्था को बनाए व बचाए रखना आज महत्वपूर्ण हो उठा है। सही मायने में लोकतंत्र वह है जिसमें योग्य, ईमानदार, कर्मठ, प्रतिभा संपन्न नेतृत्व का चुनाव करके सत्ता के संचालन का दायित्व दिया जाए एवं किसी भी मुद्दे पर आखिरी फैसला लेने के पूर्व विचार-विमर्श करके आम सहमति बनाने की चेष्टा की जाए। तानाशाही परिवार, समाज और राष्ट्र किसी के लिए भी उचित व्यवस्था नहीं है, क्योंकि इसमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं होती। एक या कई एक लोगों के विचारों को जबरन थोपने की नीति तानाशाही का प्रधान वैशिष्ट्य है।

हमारे मारवाड़ी समाज में सदियों से लोकतांत्रिक व्यवस्था का प्रचलन रहा है। शासन व्यवस्था में भले ही राजाओं, सामंतों का वर्चस्व रहा हो, लेकिन परिवार और समाज में सर्वसहमति से चुने गये व्यक्तियों के अनुसार ही कार्य-व्यापार चलता था। वृद्ध, अनुभवी लोग सामाजिक पंच की भूमिका में होते थे। उनकी राय का सभी सम्मान करते थे। परिवार में भी बुजुर्गों की राय को मानना अनिवार्य माना जाता था। निष्पक्ष फैसला करने की मानसिकता के चलते विवाद की गुंजाइश कम होती थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था कायम की गई। ऐसा करने के पीछे उद्देश्य था भारत की करोड़ों जनता में से ऐसे प्रतिनिधियों को चुनना जो देश के सर्वांगीण विकास को समर्पित हों, जो सदियों से शोषित, पीड़ित, दलित जनता की लुप्त चेतना को जाग्रत कर उनमें आत्मविश्वास पैदा कर सकें, कृषि प्रधान ग्रामीण भारत को विकसित कर जो स्वतंत्रता के दीप को आलोकित रख सकें। रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और स्वास्थ्य की न्यूनतम जरूरतों को हर नागरिक को उपलब्ध कराये, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। भारतीय राजनीति नीतिहीन, सिद्धांतहीन, स्वार्थ केन्द्रित हो गई जिसमें सत्ता हासिल करना और येन-केन-प्रकारेण सत्ता में बने रहना ही आखिरी सत्य हो गया। सत्ता पर काबिज होने के लिए घिनौने समझौते शुरू हुए। जनता पर राज करने के लिए उन्हें संकीर्णता की चहारदीवारी में कैद किया गया। विकास के मुद्दे पर चुनाव न लड़कर जातीयता, धार्मिकता, साम्प्रदायिकता पर चुनाव लड़े गये। अपराधियों की मदद से जीत सुनिश्चित करने की परिपाटी चलाई गई।

आज हम घृणित राजनीति के उस मुहाने पर आ पहुंचे हैं जहां केवल अपना वर्चस्व बनाए रखने की लड़ाई है। कोई भी राजनीतिक दल देश के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता नहीं दे रहा है।

राजनीति के इस प्रदूषण ने समाज और परिवार को भी गहरे प्रभावित किया है। राजनीति की गंदगी परिवार और समाज में घुसपैठ कर गई है। जिस तरह राजनीतिक नेता कुर्सी हथियाने के लिए गलीज से गलीज तरीके अपनाते हैं ठीक उसी तरह सामाजिक संस्थाओं पर काबिज होने के लिए घटिया हरकतें की जाती हैं। एक बार पद पा जाने के बाद आसानी से उसे कोई छोड़ना नहीं चाहता। छोड़ता भी है तो किसी शिखंडी किस्म के उत्तराधिकारी को पदारूढ़ करवाकर ताकि संचालन क्षमता अपने हाथ में सुरक्षित रहे।

गंदी राजनीति की राह पर चलकर परिवार टूट रहे हैं। भाई भाई के खून का प्यासा हो रहा है। परिवार से सुख-शांति मिट रही है। स्थिति यहां तक बदतर हो चुकी है कि पारिवारिक मामलों में भी किसी तीसरे व्यक्ति की मध्यस्थता की जरूरत हो रही है।

हम दो बिल्लियों की रोटी की लड़ाई में बंदर की भूमिका का सच जानते हैं। परिवारों में भी यही हो रहा है। तीसरा लाभान्वित हो रहा है।

यदि हमें अपने परिवार और समाज को गंदी राजनीति के चंगुल से बचाना है तो अब भी समय है हम चेतें। समाज और परिवार में बड़े-बूढ़ों की राय को अहमियत दें, उन्हें पंच मानें। सामाजिक संस्थाओं में बिना लोभ-लाभ की आशा से जुड़े। हर कहीं स्वार्थ को अहमियत देने से विरोध की स्थिति पैदा होगी ही और ऐसे में जोड़-तोड़ से लेकर सरफोड़ तक की स्थिति आनी स्वाभाविक है।

मेरा यह स्पष्ट मानना है कि हम समाज रूपी समुद्र में एक बूंद से अधिक की हैसियत नहीं रखते। जिस तरह बूंद का अस्तित्व सागर से जुड़ा होता है ठीक उसी प्रकार समाज के रहने तक ही हमारा अस्तित्व बाकी है। बूंद को सागर से निकाल दीजिए तो दूसरे ही क्षण वह सूख जायेगा। उसी तरह हम समाज से अलग हो जाएं तो हमारी पहचान खत्म हो जाएगी। जो समाज हमारी सुरक्षा करता है, हमारे विकास का पथ प्रशस्त करता है वही हमारे विनाश का कारण हो जाएगा।

अत: हम चिराग बनें और इस सत्य का अनुभव करें-

जहां रहेगा वही रौशनी लुटायेगा
किसी चिराग का अपना मकां नहीं होता

मनमोहन ने 'बाजार' को मोहा वामपंथी बने दाल में कंकर

सम्मेलन के उप सभापति श्री सीताराम शर्मा जिनकी राजनैतिक समझ एवं विश्लेषण पर अच्छी पकड़ है ने इस लेख में चुनाव के नतीजों एवं नई सरकार के सामने चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए कई गंभीर प्रश्न उठाये हैं- सम्पादक

डॉ मनमोहन सिंह भारत के नये प्रधानमंत्री बनेंगे इसकी भविष्यवाणी न तो किसी ज्योतिष ने की थी न ही संसदीय चुनाव २००४ के इन परिणामों का अंदाजा किसी चुनाव सर्वे या पोल में लगाया गया था। १३ मई को जब चुनाव नतीजे सामने आ रहे थे तो लोग 'पोल' की पोल खुलने का मजाक उड़ा रहे थे।

चुनाव के नतीजे जितने अप्रत्याशित थे उससे कम आश्चर्यजनक नहीं था श्रीमती सोनिया गांधी का प्रधानमंत्री पद ठुकराने का निर्णय। सोनिया ने प्रधानमंत्री नहीं बनने का निर्णय कब एवं क्यों लिया यह अभी भी रहस्य के गर्भ में है, किंतु 'किस्सा कुर्सी का' के युग में यह निर्णय अभूतपूर्व था एवं इसने एकतरफ विदेशी मूल के प्रधानमंत्री के सवाल को निरस्त करते हुए भाजपा के इस मुद्दे पर बड़े आंदोलन की तैयारी की हवा निकाल दी, वहीं दूसरी तरफ सोनिया गांधी के राजनैतिक एवं नैतिक कद को इतना ऊंचा उठा दिया कि देशी एवं विदेशी मीडिया ने उन्हें कांग्रेस के दूसरे महात्मा गांधी तक का दर्जा दे डाला।

चुनाव के नतीजे अपने आप में अजीब थे। आंकड़े कुछ अलग कहानी कहते हैं। न तो कांग्रेस की कोई बहुत बड़ी जीत हुई है, न ही भाजपा की बड़ी बुरी हार। कांग्रेस की ताकत में कोई बढ़ोत्तरी नहीं हुई है। वास्तव में १९९९ की तुलना में कांग्रेस के वोट इस चुनाव में १.४८ प्रतिशत कम हुए हैं- १९९९ के २८.३ से घटकर २६.८२ प्रतिशत। १९५२ के प्रथम आम चुनाव से लेकर अभी तक के चुनावों में यह कांग्रेस का सबसे कम वोट प्रतिशत है। इमरजेंसी के बाद के १९७७ के चुनाव में भी जिसमें स्वयं इंदिरा गांधी चुनाव हार गई थी, कांग्रेस को १५२ सीटें मिली थी, जो इस चुनाव की १४५ सीटों से अधिक थी। भाजपा की सीटों में काफी कमी आयी है १९९९ की १८१ की तुलना में १३८ लेकिन भाजपा का वोट प्रतिशत सिर्फ १.५४ प्रतिशत कम हुआ १९९९ के २३.७५ से घटकर २२.२१ प्रतिशत रह गया। कांग्रेस को जहां सही गठबंधन का लाभ हुआ वहीं भाजपा को नये पुराने गठबंधन के चलते आंध्र एवं तमिलनाडु से ५०-५५ सीटों का नुकसान।

२००४ के चुनावों में सबसे महत्वपूर्ण बात रही वामपंथी ताकतों का एक नयी शक्ति के रूप में उभरकर आना। आजादी के बाद यह पहला अवसर है कि वामपंथी संसद सदस्यों की इतनी बड़ी संख्या निर्वाचित हुई। ६३ सदस्यों के साथ मनमोहन सिंह सरकार का यह सबसे बड़ा समर्थक गुट है। कांग्रेसी गठबंधन को २१९ सीटें प्राप्त हुई। वामपंथी ६३ सीटों के साथ २८२ आंकड़े लेकर ५४२ सदस्यों के संसद में बहुमत प्राप्त हुआ है। जबकि भाजपा के गठबंधन को १८७ सीटें प्राप्त हुई।

वामपंथी ६३ सीटों में ६० प्रतिशत सीटें पश्चिम बंगाल से है इसलिए यह स्वाभाविक है कि पश्चिम बंगाल सरकार का केन्द्रीय सरकार पर एक विशेष प्रभाव रहेगा। पश्चिम बंगाल सरकार राज्य की आर्थिक अवनति के लिए सदैव केन्द्रीय सरकार के भेदभाव पूर्ण व्यवहार को दोषी ठहराती रही है। यह उम्मीद की जा रही है कि

'मित्र' केन्द्रीय सरकार के चलते पश्चिम बंगाल के औद्योगिक विकास में तेजी आयेगी एवं राज्य की अर्थव्यवस्था में सुधार होगा।

कांग्रेस एवं वामपंथी दलों में तीव्र वैचारिक मतभेद है। जिसका नमूना हमें पिछले दिनों देखने को मिला। सीताराम येचुरी एवं ए.वी. बर्द्धन के डिसइन्वेस्टमेंट विरोधी बयानों से शेयर बाजार डूब गया था। यह तो मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्री बनने की घोषणा ने बाजार को 'मोह' लिया।

कांग्रेस चाहती थी कि वामपंथी दल सरकार में शामिल हो जिससे 'कुर्सी' एवं सरकार चलाने की 'सीमा' में बंधे रहे लेकिन वामपंथी दलों की मुख्य राजनैतिक लड़ाई- प. बंगाल, केरल एवं त्रिपुरा में कांग्रेस के साथ होने के कारण उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया। बिना उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी के वामपंथी पूर्ण अधिकार एवं लाभ उठाना चाहते हैं तेलगू देशम के चन्द्रबाबू नायडू की तरह। वामपंथी नेताओं की सोच उनके प्रभाव क्षेत्र की तरह ही बहुत सीमित है। ज्योति बसु इससे सहमत नहीं हैं। जब श्री बसु को दल ने प्रधानमंत्री नहीं बनने दिया तो उन्होंने इसे एक ''ऐतिहासिक भूल'' बताया था। वामपंथियों को इस कुपमंडूकता से निकलना होगा, अगर वे अपने प्रभाव क्षेत्र को हिन्दी बेल्ट या दक्षिण भारत में प्रसारित करना चाहते हैं। दिल्ली की गलियों में- 'लाल किले पे लाल निशान, मांग रहा है हिन्दुस्तान' नारे लगाने से कुछ नहीं होना है।

मनमोहन सिंह को भारत के आर्थिक सुधारों का जनक कहा जाता है। उनके एवं वामपंथियों के विचार परस्पर विरोधी हैं। वामपंथी एक 'नये' मनमोहन सिंह को खोज रहे हैं। उनका कहना है कि 'हम सरकार को जरूर दबायेंगे, लेकिन इतना नहीं कि वह मर जाये।' वामपंथियों को चाहिए सरकार को पहले तैरने दे के बजाए अभी से उसके हाथ बांधना आरंभ करे।

बंगाल की वामपंथी सरकार का केन्द्रीय आर्थिक नीतियों पर सदैव विरोध रहा है। मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य ने बराबर मांग की है कि कूल टैक्स आय को केन्द्र एवं राज्यों के बीच ५०-५० प्रतिशत के आधार पर बराबर बांटा जाना चाहिए। अभी राज्य से जो कर वसूला जाता है उसका २७ प्रतिशत ही राज्य को मिलता है। मुख्यमंत्री का यह भी कहना है कि केन्द्रीय सरकार विदेशी सरकारों एवं संस्थानों से ५-६ प्रतिशत दर के ब्याज से कर्ज लेती है एवं राज्यों से १२-१३ प्रतिशत दर वसूला जाता है, यह स्वीकार नहीं है।

यह सभी स्वीकार करते हैं कि आर्थिक सुधार अनिवार्य है एवं इसका कोई विकल्प नहीं है। इसकी तीव्रता तरीके एवं रफ्तार पर मतभेद हैं। अंधा धुंध आर्थिक सुधार की एक राजनैतिक कीमत चुकानी पड़ती है। जिसका उदाहरण हमें आंध्र प्रदेश में नायडू एवं कर्नाटक में एस.एम. कृष्णा की करारी हार में देखने को मिलता है। भारत के सबसे अच्छे मुख्यमंत्री का मान प्राप्त करने वाले दिग्विजय सिंह (मध्यप्रदेश), एवं अशोक गहलोत (राजस्थान) चुनावी दंगल में पछाड़ खाते हैं। आर्थिक तरक्की या सु-शासन राजनैतिक (चुनावी) सफलता की कुंजी नहीं है। ऐसा होता तो घोर पिछड़ेपन एवं कुशासन के बावजूद लालू यादव की राजनैतिक ताकत दिन ब दिन नहीं बढ़ती और वे एक के बाद एक चुनाव नहीं जीतते। बंगाल का २७ वर्ष का वामपंथी शासन भी कोई आर्थिक उपलब्धियों का कलेण्डर नहीं रहा है, लेकिन चुनावी सफलता ने साथ नहीं छोड़ा है।

डा. मनमोहन सिंह विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री हैं। भारत के १४वें प्रधानमंत्री के रूप में उनके सम्मुख एक बड़ी चुनौती है। उन्हें एक ऐसी आर्थिक नीति प्रस्तुत करनी है जो देश की १०० करोड़ जनता के सभी हिस्सों किसान, मजदूर, क्लर्क- अफसर, युवा, महिला, दुकानदार, व्यापारी, उद्योगपति सबके लिए कल्याणकारी हो। भारत का एक बड़ा हिस्सा आज भी गांव में बस्ता है इसलिए किसान को खुशहाल होना आवश्यक है। इसके लिए कृषि पर पुन: ध्यान देने की आवश्यकता है। केवल बड़े कारखाने, पर्याप्त रोजगार मुहैया नहीं करा सकते। कुटीर, छोटे एवं मझोले उद्योग धंधे पनप सके ऐसी आर्थिक नीति पर फिर से जोर देने की जरूरत है। साथ-साथ सेवा एवं सूचना के क्षेत्र में हमने जो तरक्की की है उसे भी जारी रखना है। स्वास्थ्य एवं शिक्षा का क्षेत्र अभी भी नजरअंदाज किया जाता रहा है।●

पाठकों एवं लेखकों से निवेदन :

'समाज विकास' समाज की ज्वलन्त समस्याओं का एक विवेचक पत्र है।

लेखक-लेखिकाओं, कवि-कवयित्रियों आदि से निवेदन है कि वे अपने लेख, कहानियां, कविताएं, किस्से एवं सच्ची घटनाएं आदि हमें भेजें। देश और समाज की समस्याएं अधिकतर समानधर्मा होती हैं, तथापि उस परिप्रेक्ष्य में समाज का थोड़ा-सा विश्लेषण उचित होगा।

पत्र व्यवहार का पता :- सम्पादक, 'समाज विकास', १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७

मतभेद को मनभेद न बनने दें

✍ भानीराम सुरेका, महामंत्री

अपनों में संगठन बनाना एक अच्छी बात है। सद्उद्देश्य से प्रेरित होकर समान विचारों वाले समाज के लोगों का संगठित होना किसी भी समाज के लिए गौरव की बात है। ऐसे संगठनों के कारण ही समाज धन्य होता है, समाज की छवि निखरती है।

वैसे देखा जाए तो आजकल सामाजिक संगठनों की बहुलता है। नित नये संगठन बनते हैं, इनसे लोग जुड़ते भी हैं और टूटते भी हैं। मतभेद-मनभेद उभरकर सामने आते हैं। आजकल लोगों के बीच सहनशक्ति खत्म होती जा रही है। सभी अपने को नेता व शक्तिशाली समझते हैं, किसी की कोई भी परवाह नहीं करता, भ्रातृत्व बोध नहीं है। यह ठीक है कि सभी के विचार एक नहीं होते। सभी अपने नजरिए से किसी परिस्थिति का आकलन करते हैं। आज संगठनों में कार्यकर्त्ताओं की कमी आ गई है। आदर्श संगठनों को चाहिए कि उनका हर सदस्य एक माला में गूंथे, मोतियों की भांति परस्पर समीप और एक समान रहे। सामाजिक व्यक्ति को संगठन बनाने के लिए अपना बहुमूल्य वक्त देना पड़ेगा, धन का जोगाड़ करना पड़ेगा और लोगों की बातें भी सुनने पड़ेगी।

मारवाड़ी सम्मेलन एक बड़ा परिवार है, इसने समाज की आवश्यकता को पूरा किया है। एक सुदृढ़ संगठन बनाने का सदैव प्रयास किया जाता है, अपने सदस्यों को सुरक्षित-संरक्षित रखता है। विभिन्नताओं के बावजूद भी हम एक हैं। भारत में अनेकता में एकता की बात को पूरी दुनिया ने स्वीकारा है। सम्मेलन के सभी अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं व सदस्यों से मेरी प्रार्थना है कि आप स्वस्थ टिप्पणी करे और सकारात्मक सोच रखें, ताकि कार्य समुचित ढंग से हो। यदि कहीं कोई विसंगति नजर आती है तो आपको पूरा अधिकार है कि हमें उसके प्रति ध्यान आकृष्ट करायें ताकि उसमें सुधार किया जा सके। अपनी जिद पर अड़े रहने से न तो अपना भला होता है न समाज का। कहा भी गया है- ''झुकता वही है जिसमें जान होती है।'' अकड़ कर रहना तो मुर्दे की पहचान होती है। वस्तुत: संबंधों की कटुता और विरोध के टकराव का कारण आपसी बातचीत का अभाव होता है। जब मुंह और कान में दूरी है तो दूसरों द्वारा प्रकाशित-प्रसारित बातों पर विश्वास कर लेना कहां तक उचित है। आजकल तो आंखों देखी बातों पर भी सहसा विश्वास नहीं किया जा सकता है तो गलतफहमियां पालने व अफवाहों पर यकीन करने की गलती करना कहां तक उचित है। ईर्ष्या- द्वेष वैरभाव न हो।

अति संवेदनशीलता से बचना जरूरी है। हरेक की हर बात को गंभीरता से लेना और अपने आप मन को भारी कर लेना समझदारी नहीं है। आप बुद्धिजीवी हैं। मेरा तो सबसे यही अनुरोध है कि

साथ रहो ओ मेरे भाई
हमारी भूल को भूल जाओ
माना कि तुम्हारी जीत हुई
अपनी हार मुझे मंजूर है।
साथी हाथ बढ़ाओ
आपस में गले मिल जाओ।
शिकवों को भूल जावो
देखो प्रेम की राह पर चलके,
मुझे यह विश्वास अटल है
हम तुम होंगे एक तो
कोई भी न हमें हिला सकेगा।

भगिनी निवेदिता से सोनिया गांधी तक

✍ श्यामसुन्दर पोद्दार, कटक

भारतवर्ष में 'स्वदेशी बनाम विदेशी' पर एक राष्ट्रव्यापी बहस आजकल बहुत जोरों से चल रही है। इस बहस की शुरूआत आज से पांच वर्ष पूर्व ही हो गई थी जब पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की विधवा श्रीमती सोनिया गांधी ने कांग्रेस अध्यक्ष की जिम्मेदारी सम्भाली थी।

अब एक प्रश्न उठता है क्या मनुष्य के लिए भारतभूमि को छोड़कर अन्य कहीं जन्म लेना भारतवर्ष के हित में पाप है। भारतभूमि के अलावा अन्य कहीं जन्म लिया व्यक्ति, क्या भारत की महान संस्कृति व भारत राष्ट्र की सेवा नहीं कर सकता ? इस प्रश्न ने आज भारत के विचारवान लोगों के मन में विचार-मंथन चला रखा है।

पांच हजार वर्ष से अधिक पुरानी विश्व की प्राचीनतम सभ्यता व संस्कृति का देश ही नहीं है भारत, यह देश कभी ''विश्व की सोने की चिड़िया' हुआ करता था। एक तरफ अपनी आध्यात्मिक व सांस्कृतिक श्रेष्ठता के चलते, भारत 'विश्व गुरु' कहलाता था तो दूसरी तरफ अपनी अकूत धनसम्पदा के चलते, यह देश 'विश्व की सोने की चिड़िया' भी कहलाता था।

भारत के 'विश्व का आध्यात्मिक गुरु' के स्वरूप से प्रभावित होकर, विश्व के अन्य देशों के लोग, इस पवित्र भूमि में आये और भारत भूमि की खूब सेवा की। महात्मा बुद्ध के अनुयाई संम्राट अशोक के समय से, आज स्वामी विवेकानन्द के समय तक, इस सन्दर्भ में अनेक उदाहरण मिलते हैं। अतीत में, महात्मा बुद्ध के विचारों ने विश्व के किस कोने को प्रभावित नहीं किया। विश्व के किस कोने से लोग भारत में नहीं आये और महात्मा बुद्ध के विचारों को और अधिक धनवान नहीं बनाया तथा आज भी 'विश्व गुरु भारत' की महानता की उस परम्परा को स्वामी विवेकानन्द ने विश्व दरबार में कायम ही नहीं रखा, बल्कि और मजबूत बनाया है।

स्वामी विवेकानन्द के समय भी आयरलैंड की विदेशी महिला मार्गरिट नोबल, स्वामी विवेकानन्द द्वारा दिया गया भारतीय नाम भगिनी निवेदिता, अपने वतन आयरलैण्ड से आकर, भारत में बस गई तथा भारतीय अध्यात्म को स्वामी विवेकानन्द के निर्देशन में अधिक धनवान बनाया। इन सब बातों का सार यह है कि विश्वगुरू भारत से प्रभावित सम्पूर्ण विश्व के लोग महात्मा बुद्ध के जमाने से आज तक यहां आते रहे हैं तथा भारत के आध्यात्मिक ज्ञान विज्ञान में अपना महत्वपूर्ण योगदान करते रहे हैं।

वहीं दूसरी तरफ धन सम्पदा से परिपूर्ण विश्व की सोने की चिड़िया- भारत से प्रभावित होकर भी विदेशी आक्रमणकारी यहां आये। विदेशी यवन या फिरंगी अंग्रेज आक्रमणकारी, इस देश पर आक्रमण करके फतह हासिल नहीं कर सकते थे, यदि भारतीयों में से कुछ ने, भारत के साथ गद्दारी करके उनको पूरा सहयोग नहीं दिया होता। जयचन्द व मीरजाफर का नाम, उस तरह के भारतीयों में सबसे ऊपर है।

इस तरह एक तरफ यह बात सही है कि भारतवर्ष में जन्म लेने वाला व्यक्ति यदि महात्मा बुद्ध, सम्राट अशोक, स्वामी विवेकानंद, ऋषि अरविन्द, गांधी, सुभाष होता है तो दूसरी तरफ यह बात भी सही है कि इसी भारतवर्ष में जन्म लेने वाला व्यक्ति जयचन्द व मीरजाफर भी होता है।

विदेशों में जन्म लेकर भारत आये इस्लाम धर्म के अनुयाई, भारत भूमि में व्यापार वाणिज्य कर, यहां की धन सम्पदा को और अधिक श्रीवान बनाते हैं। सम्राट अशोक के काल में चीनी नागरिक फाहियान, ह्वेनसांग यहां के विश्वविद्यालयों में अपने ज्ञान से योगदान करते हैं तथा महात्मा बुद्ध की वाणी को और अधिक शक्तिशाली बनाते हैं। क्रिश्चियन परिवार में आयरलैण्ड में जन्मी मार्गरिट नोबल स्वामी विवेकानन्द की शिष्या बन विख्यात भगिनी निवेदिता के नाम से जानी जाने लगती है। फ्रांस में जन्मी मीरा रिसर ऋषि अरविन्द की शिष्या बन, पाण्डिचेरी आश्रम में मां के रूप में आजीवन भारत की सेवा करती है।

वहीं दूसरी तरफ विदेशी यवन मोहम्मद गोरी, मोहम्मद गजनवी, फिरंगी लार्ड क्लाइव, वारेन हेस्टिंग्स यहां की धन सम्पदा लूटखसोट ही नहीं करते, यहां के लोगों पर सीमाहीन जुल्म व अत्याचार भी करते हैं।

सिर्फ अध्यात्म के क्षेत्र में ही नहीं, भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में भी विश्व के दूसरे देशों में जन्में लोगों ने याद करने लायक योगदान किया है। इंग्लैंड में जन्मी श्रीमती एनी बेसेन्ट सन् १८९३ के जब भारत भ्रमण निमित्त आती है, तो यहां की प्राचीन सभ्यता व संस्कृति से बहुत अधिक ही प्रभावित होती हैं। यहां की सभ्यता संस्कृति का उन पर इतना गम्भीर असर होता है कि वे अपना शेष जीवन इस संस्कृति की सेवा में लगाने के लिए भारत में ही रहने लगती हैं। वे भगवत गीता का अंग्रेजी में अनुवाद ही नहीं करती, बनारस में सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल व कालेज की स्थापना भी करती हैं। यही कालेज बाद में बीज से बढ़कर पूर्ण विकसित वृक्ष के रूप में बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय के रूप में एक जमाने से आज भी राष्ट्र की सेवा कर रहा है।

प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद श्रीमती एनी बेसेन्ट भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो जाती हैं। सन् १९१४ में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के वर्मा के मान्दाला जेल से रिहा होने पर, उनकी मदद को खड़ी होती है तथा लोकमान्य तिलक के सहयोग से भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन को चलाये रखने के लिए होमरूल लीग की स्थापना करती हैं। फिरंगी हुकुमत उनके इन कार्यों से क्रोधित होकर उन्हें कैद कर लेती है। फिरंगियों के इस कदम से वे रातोंरात आजादी के दीवाने सिपाहियों की रानी लक्ष्मीबाई की तरह महान नायिका बन जाती है तथा सन् १९१७ में वे उन्हें भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन को चलाये रखने वाली एक मात्र संस्था भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का राष्ट्रपति भी बनाते हैं।

देशनायक श्री सुभाष चन्द्र बोस की सहधर्मिणी आस्ट्रिया में जन्मी श्रीमती एमिलि शेंकेल के भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान को कौन भुला सकता है।

ब्रितानिया हुकुमत की हर पहरेदारी की जंजीरों को तोड़कर, जब भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का महान योद्धा सुभाष चन्द्र बोस, भारत से निकलने में कामयाब हो जाता है और २ अप्रैल १९४१ को जर्मनी के बर्लिन शहर में पहुंचता है वहां उन्हें मातृभूमि की मुक्ति का आन्दोलन मि.ओ. मज्जोटा के छद्मनाम से भूमिगत होकर चलाना पड़ता है। क्योंकि ब्रिटिश खुफिया तंत्र की विश्वव्यापी उपस्थिति, जर्मनी में भी मजबूत रहती है। भारतमाता की मुक्ति के इस भूमिगत आन्दोलन में देशनायक सुभाष चन्द्र बोस की सहधर्मिणी, आस्ट्रिया निवासी एमिलि शेंकेल, उनका कदम-कदम पर साथ ही नहीं देती, बल्कि इस आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भागीदारी भी करती हैं।

८ फरवरी १९४३ में जर्मनी से जापान के लिए जोखिम भरी गुप्त सबमेरिन यात्रा के लिए रवाना होते समय, देशनायक सुभाष चन्द्र बोस ने अपने बड़े भाई महान स्वतंत्रता सेनानी श्री शरत चन्द्र बोस को एक मर्म स्पर्शी पत्र लिखा-

''आज मैं पुन: विपत्ति के पथ पर रवाना हो रहा हूं। इस बार होगा तो, शायद घर की तरफ के पथ का अन्त नहीं देख सकूंगा। इस पथ के बीच, किसी तरह की विपदा यदि आई, तो इस जीवन में कोई भी समाचार नहीं दे सकूंगा। इसलिए मैं अपना समाचार यहां रखकर जा रहा हूं। यथा समय यह समाचार तुम्हारे पास पहुंच जाएगा। मैंने यहां विवाह किया है एवं मेरी एक कन्या हुई है। मेरे नहीं रहने पर मेरी सहधर्मिणी व कन्या को कुछ स्नेह देना - जिस तरह सारा जीवन मेरे को दिया है। मेरी स्त्री व कन्या, मेरा असम्पूर्ण कार्य शेष करे, सफल व पूर्ण करें, भगवान के निकट यह ही मेरी अंतिम प्रार्थना है।''

द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी की पराजय के बाद, मित्र राष्ट्र ग्रेट ब्रिटेन, अमरीका व रूस के हाथ, जब जर्मनी और उसके विजित राष्ट्र आ गये तब ब्रितानिया हुकुमत ने सुभाष बाबू की सहधर्मिणी एमिलि शेंकेल को अमानवीय यातनायें दी। मित्र राष्ट्रों ने यूरोप में सिर्फ जर्मनी पर ही विजय हासिल की थी, परन्तु जर्मनी की पराजय के बाद भी एशिया में जापान व सुभाष बाबू की आजाद हिन्द फौज ने, मित्र राष्ट्रों की नाक में दम कर रखा था। **भारतमाता की मुक्ति के लिए प्रतिबद्ध, श्रीमती एमिलि शेंकेल सुभाष चन्द्र बोस ने फिरंगी अंग्रेजों की हर प्रकार की यातनाओं और जुल्म को हंसते-हंसते सहा।**

आज के भारतीय शासकों ने श्री राजीव गांधी की विधवा श्रीमती सोनिया गांधी को, 'स्वदेशी' बनाम 'विदेशी' बहस में मुख्य पात्र बना रखा है। **बहस स्वदेशी बनाम विदेशी पर हो और सिर्फ एक नायिका विशेष पर ही चर्चा चलती रहे, दोनों पक्षों पर नहीं, तो इस राष्ट्रव्यापी बहस के प्रति यह नाइन्साफी होगी।**

बहस तभी सार्थक बहस हो सकती है, जब स्वदेशी नायक श्री अटल बिहारी वाजपेयी व विदेशी खलनायिका श्रीमती सोनिया गांधी, दोनों के चाल, चरित्र व योग्यता पर बहस हो अन्यथा इस बहस सत्तापक्ष का एक निम्नस्तरीय मजाक के अलावा कुछ नहीं रहेगी। विश्व की अग्रणी पंक्ति का राष्ट्र अमेरिका, जहां क्रिश्चियन धर्म राजधर्म भी है। क्रिश्चियन परिवार में जन्मी पत्नी जेनिफर एक राजनैतिक व्यक्ति श्री जान.एफ. केनेडी से विवाह के पश्चात पति श्री केनेडी के अमरीका के राष्ट्रपति चुने जाने पर अमरीका की प्रथम महिला बनती है। श्रीमती जेनिफर केनेडी, पति अमरीकन राष्ट्रपति श्री केनेडी की हत्या के बाद केनेडी से उत्पन्न बच्चों को छोड़, विश्व के अन्यतम धनाढ्य व्यक्ति श्री ओनासिस से विवाह रचा, मौज मस्ती की जिन्दगी की राह अपना लेती है, यह शायद विदेशी संस्कृति की देन है। पर इटली के क्रिश्चियन परिवार में जन्मी पत्नी, एन्टोनिया माइनो भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी से परिणय सूत्र में बंधकर एन्टोनिया माइनो से श्रीमती सोनिया गांधी बन जाती है। अमरीकन राष्ट्रपति श्री केनेडी की तरह ही, भारत के प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की मृत्यु स्वाभाविक मृत्यु नहीं होकर, एक षड्यंत्र में हत्या द्वारा होती है। श्री राजीव गांधी की हत्या के बाद उनकी यह विदेशी पत्नी श्रीमती सोनिया गांधी, श्री केनेडी की विधवा जेनिफर केनेडी की तरह, बिल्कुल ही व्यवहार नहीं करती। श्री राजीव गांधी की हत्या को लगभग तेरह वर्ष हो रहे हैं, इस दौरान उनकी विधवा श्रीमती सोनिया गांधी ने जिस तरह से अपना जीवन जीया है, वह आदर्श भारतीय नारी सीता, सावित्री की कल्पना से जरा भी हटकर नहीं है। इस बात पर रत्ती भर भी सन्देह की गुंजाइश भी नहीं है।●

समाज-इकाई : मूलभूत प्रश्न

✍ स्व. पुरुषोत्तमदास हलवासिया

यह अकाट्य सत्य है कि मारवाड़ी समाज में व्यक्ति से अधिक पैसे को महत्व दिया जाता है और जब तक यह स्थिति रहेगी, समाज में चरित्रवान, कर्त्तव्यनिष्ठ, निष्ठावान और सेवा-संकल्प से अभिषिक्त कार्यकर्ताओं का अभाव बना रहेगा। मनुष्य धन न भी चाहे पर प्रतिष्ठा चाहता है और यदि उस प्रतिष्ठा के लिए धन की आवश्यकता है तो वह उसके लिए लालायित रहेगा। यदि वह कर्म और सेवा से भी प्राप्त है, तो वह उसके लिए प्रयत्न करेगा।

जिस संस्था में धन के कारण किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा होती है वह संस्था अर्थ प्रधान होकर सेवा को गौण मानती है, गुण का वहां कोई महत्व नहीं रहता क्योंकि वहां तो 'सर्वे गुणा: कांचनमाश्रयन्ति' (सारे गुण सोने में समाये) माने जाते हैं। इस विचारधारा को बदल कर ही समाज-कल्याण का कार्य हो सकेगा। सम्पन्न व्यक्ति के पास यदि केवल धन ही एक मात्र गुण हो तो उसका कर्त्तव्य है कि-

पानी बाढ्यो नाव में घर में बाढ्यो दाम-
दोनों हाथ उलीचिये यही सयानो काम।।

और उसको वह धन बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय में लगाना चाहिए।

कोई व्यक्ति यह सोचता है कि धन उसने कमाया है और उस पर उसका ही एकाधिकार है तो यह उसकी सर्वथा भूल है। धन तो ईश्वर की कृपा की देन है अन्यथा उससे अधिक गुणी और अच्छी व्यवस्था करने वाले उन्हीं कार्यों में लगे व्यक्ति उतने सम्पत्तिशाली नहीं हो पाते। ईश्वर ने यदि धन की किसी पर विशेष कृपा की है और वह उस धन के कारण अहंकारी हो जाता है तो उसका मन कलुषित हो जाता है, लोभ के वशीभूत होकर दूसरों के धन का स्वामी बनना चाहता है, ईर्ष्या, द्वेष का शिकार हो जाता है और दूसरों को हेय दृष्टि से देखने लगता है। होना यह चाहिए कि जिस समाज से धन कमाया उस उपार्जित धन में से अपनी आवश्यकतानुसार प्रसाद अपने लिए रखकर शेष समाज के कल्याण के लिए अर्पित कर दे।

व्यक्ति-व्यक्ति को यह समझने की आवश्यकता है कि धन की तीन गति- दान, भोग और नाश में से दान ही श्रेष्ठ है। लेकिन दान में भी यदि वह व्यक्तिगत स्वार्थ सिद्धि और अपने नाम का ढोल पीटने के लिए हो तो वह अनुचित है। आज दुर्भाग्य यह है कि समाज के कार्यकर्ता भी इस तरह की मनोवृत्ति को बढ़ावा देते हैं। मुझे सुनकर दु:ख होता है कि फलां व्यक्ति को संस्था में इसलिए लिया गया है क्योंकि उससे संस्था को आर्थिक सहायता मिलेगी। इस दिशा में स्वार्थ इतना प्रबल हो गया है कि किसी असहाय की सहायता इसलिए नहीं हो पाती क्योंकि उसके द्वारा दाता के नाम का प्रचार नहीं हो सकता।

धन की दूसरी गति- भोग में तीव्रता आ गई है और इसमें होड़ लगी हुई है। कौन अधिक फिजूलखर्ची कर सकता है, इसकी स्पर्धा हो रही है। मकान की सजावट, विवाहों में दिखावे आदि को लोगों ने अपने नाम की प्रतिष्ठा का साधन बना लिया है। इन सबसे कुछ बचे तभी तो अभावग्रस्त के सिर पर छप्पर बन सकेगा- उसके खाने को सूखी रोटी उपलब्ध होगी- तन ढकने को कपड़ा मिल सकेगा। करोड़ों रुपये अपनी प्रतिष्ठा बनाने में लगाने वाले से दीन-हीन व्यक्ति यदि थोड़ी सी सहानुभूति, सहायता चाहे तो माथे पर शिकन आ जाती है।

समाज के कार्यकर्ताओं का, जो इन थोथी बातों से समाज को बचाना चाहते हैं, कर्तव्य हो जाता है कि ऐसे कार्यों का विरोध करें और ऐसे प्रदर्शन में भाग न लें।

समाज में अनेक रूढ़िवादी प्रथायें आज भी चालू हैं। उनका संस्कार करने की आवश्यकता है। इसके लिए चिन्तनशील व्यक्तियों को एक साथ बैठकर विचार-विनिमय के द्वारा कुछ आधारभूत नियम बनाने चाहिए। प्राय: ७० वर्ष पूर्व समाज की पंचायत ने वैवाहिक कार्य में कुछ मर्यादायें निश्चित की थीं जिनमें - मिलनी में चार रुपये आदि-आदि - आज उसका रूप भी बिगाड़ा जा रहा है। चालू रुपयों के स्थान पर चांदी के पुराने चार रुपये जो परोक्ष रूप में अधिक मूल्य के होते हैं या उन पर सोने का झोल चढ़ा कर देते हैं। ऐसे करने वाले जहां धिक्कार के पात्र हैं वहां उन समारोहों में भाग लेने वाले उस दूषित कार्य का समर्थक माने जाएंगे।

क्या सादगी से होने वाले विवाह 'विवाह' नहीं होते ? इनमें आडम्बर में खर्च की जाने वाली राशि सामाजिक कल्याण के कार्यों के लिए क्यों नहीं दी जा सकती ? क्यों लड़के वालों की मांगों को बन्द कराने का प्रयास समाज के कार्यकर्ता नहीं करते ? सुन्दर, सुशील, पढ़ी-लिखी लड़की के नाम पर धन सम्पदा की टोह लेने वाले लड़के वाले क्या दोषी नहीं हैं ? फिर क्यों समाज ऐसे दोषपूर्ण कार्यों में सहयोगी होता है ?

इन सारी बातों की तह में केवल एक ही कारण चल रहा है, समाज में व्यक्ति की मर्यादा का मापदण्ड पैसा है। समाज में आवश्यक शिक्षा, सम्पदा, शक्ति की परिभाषायें बदल गई हैं- शिक्षा नौकरी के लिए, धन भोग के लिए तथा शक्ति निर्बल को दबाने के लिए रह गई है। इन परिभाषाओं का परिमार्जन और परिवर्तन करने की आवश्यकता आज सर्वाधिक है अन्यथा समाज का पतन अवश्यम्भावी है। उसका दोषी कौन होगा और कौन नहीं, यह अलग बात है।●

हर सफल व्यक्तित्व के अन्तस में कहीं न कहीं गहरी एकात्मता, सच्चाई और पवित्रता हारती ही है और वही उसकी सफलता का सार है। संभव है कि वह पूर्णत: अस्वार्थी न हो, लेकिन वह उस दिशा की ओर अग्रसर अवश्य है। यदि वह सम्पूर्ण अस्वार्थी होता तो उसकी सफलताएं भी बुद्ध और ईसा की ऊंचाइयों को पहुंचती।

- स्वामी विवेकानन्द

धर्म के नाम पर बढ़ा है पाखंड

समाज के सुपरिचित श्री विश्वनाथ सराफ कहते हैं कि जमाना बदल गया है और बदलाव की आंधी थमने का नाम नहीं ले रही है। एक समय था जबकि लोग लड़की के लिए लड़के की तलाश करते थे लेकिन आज तो समाज के लोग एक दूसरे से जब भी मिलते हैं तो एक ही सवाल होता है कि 'भाई, कोई अच्छी लड़की हो तो बताओ।'

यह सच है कि कोलकाता में धार्मिक अनुष्ठान, कार्यक्रम, प्रवचन और भजन-कीर्तन के आयोजन पहले से काफी बढ़ गए हैं। धार्मिक कार्यक्रमों में भीड़ भी जुटने लगी है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं निकालना चाहिए कि लोगों की धर्म के प्रति आस्था बढ़ गई है। सही तो यह है कि धर्म के नाम पर पाखंड, दिखावा और आडम्बर काफी बढ़ गया है जो कि एक अच्छा संकेत नहीं है। दरअसल अन्य सभी क्षेत्रों में तो दिखावा काफी पहले से ही हावी है मगर अब तो धार्मिक गतिविधियों को भी दिखावा और आडम्बर की बढ़ती प्रवृत्ति ने अपने आगोश में समेट लिया है। लोगों ने धार्मिक अनुष्ठानों को अपने स्टेटस से जोड़ लिया है और यह अब कुछ लोगों के लिए स्टेटस सिम्ब बन गया है। अनाप-शनाप खर्च होता है जिसका लाभ नहीं मिल पाता। धार्मिक आयोजनों में हो रहे बेशुमार खर्च में से कटौती कर कुछ धन गरीबों की मदद में अगर खर्च किया जाए तो शायद यह सबसे बड़ा धार्मिक अनुष्ठान होगा। कितने लोग प्रवचन सुनकर पालन करते हैं और कितने प्रवचन करने वाले लोग जो उपदेश दूसरों को देते हैं उसे खुद पालन करते हैं। सही धर्म और सही सेवा तो दबे, कुचले, गरीब व जरूरतमंदों की मदद करने में ही है।

समाज में पहले एक दूसरे से मिल जुलकर चलने और आपस में मदद करने की परम्परा सी थी लेकिन आज की स्थिति भिन्न है। लोग सिर्फ अपने तक सीमित रहते हैं। पहले लोग बड़े परिवार में रहना पसंद करते थे जबकि आजकल के लोग अलग रहने में खुश रहते हैं। एक दूसरे के सुख-दु:ख में खड़े रहने की भावना में कमी आयी है। दरअसल पीढ़ी का फर्क है। बदले हुए दौरे में एक तरफ कुछ अच्छाइयां है तो दूसरी तरफ बुराइयों ने भी आ घेरा है। परिवर्तन जो भी हो रहा है वह अच्छा ही हो रहा है बशर्ते हम अपने विवेक का इस्तेमाल करें तो कहीं कोई दिक्कत नहीं आयेगी। सास-बहु, मां-बेटी की तरह रहने लगी है। ये बस अच्छी बातें और समाज के लिए शुभ संकेत है। समय की गति तेज हो गई है। खासकर संचार क्षेत्र में आयी क्रांति ने भी सामाजिक परिवर्तनों में अपना रंग दिखाया है।

दरअसल आजकल लोगों को परिवार का या समाज का भय नहीं रह गया है। पहले ऐसी बात नहीं थी। लोगों को इस बात का भय बना रहता था कि अगर हम कोई गलत काम करेंगे तो समाज में शर्मिंदा होना पड़ेगा। बदले हुए दौर में सभी अपने मन के राजा हैं जिसको जो मन आता है अपने मन मुताबिक काम करता है और उसे किसी की परवाह नहीं रहती। समाज और परिवार की मान्यताएं व परंपराएं ताक पर रखकर कदम उठाए जा रहे हैं यही वजह है कि तरह-तरह की विषमताएं देखने सुनने को मिल रही है। सभी अपने आपको सक्षम मान बैठे हैं। कुछ हद तक यह बात सही भी है कि पहले के मुकाबले आजकल लोग स्वावलम्बी हुए हैं लेकिन स्वावलम्बी बनने का मतलब यह नहीं होता कि हम मनमानी शुरू कर दें। सामंजस्य, सहनशीलता और समझौता करके ही समाज में, परिवार में रहा जा सकता है। जो लोग अकेले में रहना पसंद करते हैं अपने मन मुताबिक चलना पसंद करते हैं और अपनी ही मर्जी से कोई भी काम करना पसंद करते हैं ऐसे लोगों को एक न एक किसी न किसी मुकाम पर पश्चाताप करना पड़ता है। आज की शिक्षा पद्धति में मेरी नजर में कोई कमी नहीं है। जो भी शिक्षा उपलब्ध है वह व्यावहारिक है आज के जरूरत के मुताबिक है। पाश्चात्य संस्कृति का भी दोष नहीं है कमी है नैतिक और मानवीय मूल्यों की। टीवी सभ्यता के प्रभाव से हमारा अपना सामाजिक ढांचा छिन्न-भिन्न हो गया है। टीवी धारावाहिकों के माध्यम से आखिर हमें क्या मिल रहा है? बच्चों को किस तरह की शिक्षा मिल रही है? अधिकांश धारावाहिकों के माध्यम से हमें सिर्फ झगड़ा, फसाद, हिंसा, मारकाट और उग्रता ही हाथ लग रही है। जरूरत है कि धारावाहिकों के माध्यम से शिक्षाप्रद प्रसंग दिखाने-समझाने की ताकि नई पीढ़ी को अपना जीवन सजाने-संवारने के लिए कुछ सीख मिल सके। पश्चिम बंगाल के औद्योगिक परिदृश्य का जो भी हाल है उसके लिए यहां के राजनीतिक दल ही दोषी हैं जो कुछ बिगड़ना था बिगड़ गया कम से कम अब तो राजनीतिक दलों को राज्य की तरक्की के लिए मिलजुल कर प्रयास करना चाहिए। मुख्यमंत्री श्री बुद्धदेव भट्टाचार्य अपने स्तर से कोशिश कर रहे हैं लेकिन उनकी पार्टी के थिंक टैंक की विचारधारा में अभी भी बदलाव आना बाकी है।●

राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता का प्रश्न

✍ डॉ. वेंकट शर्मा

भारत की पश्चिमोत्तर सीमा पर अवस्थित राजस्थान प्रदेश अपना भाषा-साहित्य, सांस्कृतिक वैभव तथा जीवनदर्शन के बहुआयामी क्षेत्रों में वैशिष्ट्यमूलक महत्व एवं वर्चस्व रखता है। वैदिककालीन सारस्वत सभ्यता के प्रारंभ से लेकर आज तक उसने राष्ट्रीयता के उन्नयन एवं विकास में जिस प्रकार की महिमामण्डित भूमिका का सम्यक निर्वाह किया है, वह भारतीय इतिहास की सुदीर्घ श्रृंखला में एक जाज्वल्यमान 'रत्नकण' अथवा 'कमनीय कड़ी' के रूप में संग्रथित है। भारत के मानचित्र पर प्रतिष्ठित इस भूभाग की अनेक विध उपलब्धियों के आकलन एवं अनुसंधान से प्रकट होता है कि यदि इस प्रदेश के गौरवपूर्ण इतिहास को उपेक्षित कर दिया जाए तो भारतीय संस्कृति और कलासौष्ठव का उजवल पक्ष धूमिल अथवा विकलांगतुल्य हो सकता है। राष्ट्रभाषा हिन्दी के उद्भव और विकास का प्रथम चरण इसी प्रदेश की आंचलिकता से प्रवर्तित हुआ था जिसे हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों ने वीरगाथाकाल अथवा 'आदिकाल' आदि संज्ञाओं से अभिहित किया है। ऐसे महान प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत और साहित्यिक अस्मिता से सुपरिचित होते हुए भी उसकी प्रादेशिक भाषा 'राजस्थानी' को भारतीय संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्मिलित करने के लिए आज तक संवैधानिक मान्यता नहीं मिल सकी है, यह एक अत्यंत ही दुर्भाग्यपूर्ण, गंभीर तथा विचारणीय प्रश्न है।

हम यह स्वीकार करते हैं कि विश्व के अनेक देशों की भांति भारत में भी वैविध्यमूलक भाषा तत्वों एवं उपकरणों का प्राचुर्य प्रारंभ ही से रहा है किन्तु उनकी अंतश्चेतना में प्रवाहित जीवनधारा की गति निश्चय ही 'एक' और 'अखण्ड' भी रही है जो एक निर्विवाद सत्य है। 'प्रत्यक्षं किं प्रमाणं' की सूक्ति के अनुसार उसके लिए प्रमाण जुटाने की कोई आवश्यकता नहीं है। भारत के चतुर्दिक भू-भागों में प्रतिष्ठित चारों धाम तथा गंगा और कावेरी की समन्वित उत्ताल तरंगें जिस महासागर में विलीन होकर, एकप्राण हो जाती हैं, वह हमारे तादात्म्य अथवा एकात्मबोध का ही तो एक अखण्डित स्वरूप है जिसने भारतीय संस्कृति को चिरंतनकाल से ही एक ही सूत्र में मणिमाला (कावली) में पिरो रखा है। व्यक्तिगत विचारधाराओं और जीवन-दृष्टियों में हम भिन्न-भिन्न हो सकते हैं किंतु जब राष्ट्रीय मंच पर एकत्र होकर राष्ट्रहित एवं लोककल्याण की सद्भावनाओं से सोचने लगते हैं तो हमारे चिंतन का सम्पूर्ण क्रियाकलाप राष्ट्रोन्मुखी हो जाता है। ज्ञान-विज्ञान, कला-साहित्य तथा धर्मदर्शन के क्षेत्रों में भारत ने विश्व परिवार का नेतृत्व किया है, किन्तु अपने पारस्परिक ईर्ष्याद्वेष, विध्वंसकारी दम्भ, घोर स्वार्थपरायणता क्षुद्रमनोवृत्ति, साम्प्रदायिक दल बंदियां, जातिवादी संकीर्णता और ऊंच-नीच की भेदभावनाओं ने यहां के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन की मानवीय समरसता को क्षत विक्षत कर दिया है जिसकी दुर्बलताओं का लाभ उठाते हुए विदेशी आक्रामकों ने उसे परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ लिया था। राष्ट्र के कर्णधारों और जनता जनार्दन के संयुक्त तत्वावधान में संगठित लोकशक्ति के बल पर भारत जिन परिस्थितियों में स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उन्नमित हुआ, उनमें देशविभाजन की दुःखद परिणति भी सम्मिलित थी जिसके अभिशापों की पीड़ा सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए आज भी हृदय-विदारिणी बनी हुई है। हमें विदेशी शासन से तो मुक्ति अवश्य मिल गई किन्तु हमारी मानसिक दासता में उसके संक्रामक विषाक्त कीटाणु आज भी इस प्रकार घुल मिल गये हैं कि हम चाहे अथवा न चाहे, किसी भी रूप में उनसे अपना पीछा छुड़ाना नहीं चाहते। अंग्रेजी भाषा की तहजीब पर हम आज भी मुग्ध हैं, और उसे राजभाषा का दर्जा देने में हमें आत्मसम्मान और राष्ट्र-गौरव की अनुभूति होती है, किन्तु जब राष्ट्रभाषा हिन्दी के अभ्युत्थान के साथ-साथ प्रादेशिक भाषाओं को यथोचित महत्व प्रदान किये जाने का प्रश्न उठता है तो हमारी वाणी मूक तथा बुद्धि असंतुलित हो जाती है। इस प्रकार की वैषम्यपूर्ण विडम्बना की सर्वाधिक पीड़ा और वेदना राजस्थान प्रदेश में 'राजस्थानी' भाषा को झेलनी पड़ रही है जिसका प्रतिनिधित्व करने वाली विधानसभा सुदीर्घ काल पर्यन्त उसे शाब्दिक सहानुभूति मात्र देकर ही मौन हो जाती थी। हर्ष की बात है कि अब जनजागरण संघर्ष-समिति, लोकप्रतिनिधियों तथा साहित्यकारों की प्रबुद्ध चेतना के सत्प्रयासों के बल पर राजस्थान की विधानसभा ने राजस्थानी भाषा के महत्व को स्वीकार कर उसे गत वर्ष जिस रूप में लोकसभा में प्रस्तुत करने का प्रस्ताव भेजा है, वह निकट भविष्य में निश्चय ही उसे संवैधानिक मान्यता प्रदान करने में सार्थक सिद्ध होगा, ऐसा हमारा सुदृढ़ विश्वास है।

भारतीय संविधान में जब प्रत्येक प्रदेश अथवा राज्य को उसके नामकरण के आधार पर उसकी प्रादेशिक भाषाओं को मान्यताएं प्राप्त हैं तो राजस्थान प्रदेश ही उस अधिकार से वंचित क्यों रखा जा रहा है? निश्चय ही इस प्रदेश की संवैधानिक भाषा 'राजस्थानी' ही हो सकती है क्योंकि यह नाम शताब्दियों से स्वीकृत एवं लोकमान्य रहा है। संवैधानिक मान्यता के अनुसार राजस्थानी भाषा में वे सभी गुण और विशेषताएं विद्यमान हैं जो किसी भी प्रादेशिक भाषा में अभीष्ट और वांछनीय समझे जाते हैं। साहित्य, सम्पदा, शब्दकोष, व्याकरण और लिपि आदि के विचार से भी राजस्थानी भाषा अत्यंत ही समृद्धिशाली एवं प्राचीन है जिसके वाङ्मय में असंख्य ग्रंथरत्नों का भण्डार भरा हुआ है। उसका उद्गमस्थल मूलतः गुर्जर और मरूप्रदेश रहा है जहां के उपभ्रंश कालीन भाषा-साहित्य के प्रवाह के समानांतर उसका क्रमागत विकास हुआ है। कहने की

आवश्यकता नहीं कि राजस्थानी भाषा के अस्तित्व और उसकी साहित्यिक गुणसम्पदा की प्रशंसा शताब्दियों से की जाती रही है। उसे सर्वथा नकार देने की दुष्प्रवृत्ति कूपमण्डूकता तथा ओछी हरकतों की ही सूचक है। डॉ. ग्रियर्सन ने 'भारतीय भाषाओं के सर्वेक्षण' नामक ग्रंथ में उसके प्रादेशिक विस्तार का सप्रमाण विवेचन किया है तो अमेरिकन विद्वान डॉ. वेकफील्ड ने उसे विश्व के भाषासमूह में पचीसवां स्थान प्रदान करते हुए उसके साहित्य-वैभव की प्रशंसा की है। कर्नल जेम्स टॉड तथा इतालवी विद्वान टेसीटोरी तो उसके अभिव्यंजन-सौष्ठव एवम् साहित्य सौन्दर्य पर इतने अधिक मुग्ध थे कि उन्होंने उसके संदर्भों में अनेक स्थलों पर उसकी सराहना की है। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी उसके विशाल साहित्य को वीर, श्रृंगार तथा भक्तिरस का अद्भुत एवं अनुपम रत्नकोष स्वीकार करते हुए उसका प्रबल समर्थन किया है। डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या जैसे विश्व प्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक विद्वान एवं भाषाशास्त्री मनीषी ने अपने ग्रंथों तथा अभिभाषणों में उसकी अस्मिता और वर्चस्व की मुक्तकण्ठ से अभिशंसा की है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रार्थनासभाओं एवं उनके प्रवचनों में राजस्थान की मरूमंदाकिनी मीरा बाई के भक्तिपद जिस तल्लीनतापूर्वक गाये अथवा सुने जाते थे, वे राजस्थानी भाषा के गुणगौरव के ही तो प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। उसके अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए 'आईने अकबरी' तथा मध्यकालीन इतिहास ग्रंथों के पृष्ठों से ऐसे अनेक उद्धरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं जिनसे उसके परम्परागत अस्तित्व पर प्रश्नवाचक चिह्न नहीं लगाये जा सकते।

यह भी एक विचित्र विडम्बना है कि राष्ट्रीय मंच पर राजस्थानी भाषा ने जिस रूप में अपनी महिमामण्डित गरिमा प्रतिष्ठित कर रखी है और जिसका भाषा-साहित्य देश-विदेश के विश्वविद्यालयों में शोधकार्य एवं अनुसंधान के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ रहा है, उसका विरोध जब राजस्थान के ही अधिवासी एवं तथाकथित कतिपय विद्वानों, विचारकों, राजनेताओं एवं वर्ग-विशेष के समर्थक प्रबुद्धजनों के द्वारा ही किया जाता है तो इससे बढ़कर राजस्थान प्रदेश के लिए अन्य दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति और क्या हो सकती है? अपनी स्वार्थवृत्ति और अहम्मन्यता की झूठी शान का चोगा उतार कर हमें अपने राष्ट्र कल्याण के साथ-साथ अपने प्रादेशिक हितचिंतन को भी सोचना पड़ेगा, तभी हम इस प्रकार के आत्मघाती आक्रमण अथवा तूफानी बवंडर से अपनी अस्मिता का संरक्षण कर सकते हैं। आज के संघर्षशील वातावरण में हमें सद्भावनापूर्ण अंतर्दृष्टि से वस्तुस्थिति का सही जायजा लेकर ही अपना न्यायपूर्ण निर्णय करना होगा ताकि अपने अस्तित्व की मर्यादा में रह कर हम राजस्थानी भाषा-साहित्य के अतीतकालीन गौरव को वर्तमानयुग की विभीषिकाओं से बचा कर अपने विकास के भावी स्वप्नों को साकार कर सकें। इसके लिए 'एकला चलो रे' के स्थान पर हम 'संगच्छध्वं सं, संवदध्वं, संवं मनांसि जान ताम्' की परम्परा सांस्कृतिक एवं मानवोचित चिंतन-पद्धति और नीति अपनानी पड़ेगी।

राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता प्रदान कराने के लिए चलाया गया आन्दोलन केवल मानसिक संवेगों का ही उच्छृंखल आन्दोलन नहीं है अपितु उसके मूल में प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय एकता की भावात्मक अनुभूति एवं अभिव्यक्ति के तत्वकण भी समाहित है। जब भारतीय संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा अथवा राजभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया गया है तो उसकी प्रादेशिक भाषा के रूप में राजस्थानी को भी उसी प्रकार की मान्यता मिलनी ही चाहिए जिस प्रकार की मान्यता मराठी, पंजाबी, बंगला, गुजराती तथा दाक्षिणात्य प्रदेशों की चारों भाषाओं (तमिल, तेलुगू, मलयालम तथा कन्नड़) आदि को मिली हुई है। यहां पर राजस्थानी भाषा के विरोधी तत्वों ने एक अधकचरा यह प्रश्न भी उपस्थित कर रखा है कि राजस्थानी भाषा हिन्दी भाषा की शाखा का ही एक प्रादेशिक रूप है, अत: उसके स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस प्रश्न के अनेक उत्तर दिये जा सकते हैं जिनके निषकर्ष के रूप में केवल इतना ही निवेदन करना पर्याप्त होगा कि यों तो उत्तरी भारत की सभी आधुनिक भाषाओं की जननी अपभ्रंशभाषा की विभिन्न शाखाएं ही रही हैं जिनके व्याकरण के नियमों और शब्द समूहों के स्वरूप गठन में अत्यधिक साम्य है, किन्तु उन सबने अपने-अपने प्रादेशिक स्तरों पर अपनी अपनी पृथक् पहचान भी बनाई है। राजस्थानी भाषा भी उसका अपवाद नहीं कही जा सकती क्योंकि उसके परिसर में परिगणित होने वाली मेवाती, शेखावटी, मारवाड़ी, हाड़ोती, मेवाड़ी,

राजस्थान साहित्य अकादमी को भंग करने की कोशिश
उच्च न्यायालय द्वारा सरकारी आदेश निरस्त

जयपुर। राजस्थान उच्च न्यायालय ने राज्य सरकार द्वारा राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर को भंग करने के २३ दिसम्बर, २००३ के आदेश को तथा जिलाधीश उदयपुर को अकादमी के प्रशासक नियुक्त करने संबंधी आदेश को निरस्त कर दिया है।

अकादमी अध्यक्ष वेदव्यास, कार्यकारिणी सदस्य श्याम महर्षि एवं सरस्वती सभा सदस्य सलीम खां फरीद की संयुक्त याचिका पर न्यायमूर्ति एस.के. कैशोटे ने अपने निर्णय में कहा कि- राज्य सरकार ने अकादमी संविधान की धारा २३(ख) के अंतर्गत अकादमी भंग करने की विशेष परिस्थितियों का कहीं कोई उल्लेख नहीं किया है तथा याचिका के उत्तर में भी लगातार न्यायालय में कोई कारण नहीं बताए हैं तथा राज्य सरकार के निर्णय को पत्रावली तक प्रस्तुत नहीं की है। न्यायमूर्ति कैशोटे ने कहा कि इसलिए केवल सरकार का बदलना मात्र ही अकादमी को भंग करने का राज्य सरकार का आदेश और निर्णय अनुचित और अवैधानिक है।

प्रार्थियों की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता एस.आर. बाजवा एवं राजेन्द्र प्रसाद शर्मा ने राज्य सरकार के अकादमी भंग करने के निर्णय को राजनीतिक दुर्भावनाओं से प्रेरित बताया तथा कहा कि राज्य सरकार ने निरंतर कारण नहीं बताकर और अकादमी को भंग कर प्राकृतिक न्याय की भी मजाक उड़ाई है।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि वेद व्यास को पहले भी भाजपा सरकार द्वारा ही १९९० में राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृत अकादमी, बीकानेर और १९९४ में राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर के अध्यक्ष पद से बर्खास्त किया गया था।

बागड़ी और ढूंढाड़ी आदि बोलियां उसी के अवांतर स्वरूप है जिनका लोकसाहित्य, राजस्थान प्रदेश की सांस्कृतिक गतिविधियों का कमनीय कलानिधि बन कर उनकी जीवनदृष्टि का प्रतिनिधित्व करता है। उसका वैशिष्ट्य और सौन्दर्यबोध अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखता है जिसे हिन्दी प्रदेश से सम्बन्धित तो किया जा सकता है किन्तु उसे ब्रजमण्डल तथा अवधप्रांत अथवा उत्तर प्रदेश आदि की प्रादेशिकता में अंतर्विलीन नहीं किया जा सकता।

भारतीय संविधान में ऐसी अनेक प्रादेशिक भाषाओं को भी आठवीं अनुसूची में रखा गया है जो अपने साहित्य की गुणवत्ता तथा भाषा भाषियों की संख्या तथा क्षेत्रीयता में स्वल्प एवं विरल है किन्तु उन प्रदेशों में व्यर्थ के मतभेदों को तूल नहीं दिये जाने के कारण उनके तादात्म्यमूलक संगठन ने उन्हें वैधानिक मान्यता का दर्जा दिला दिया है। ऐसी भाषाओं के जनपदीय स्वरूप में भी भिन्नताएं परिलक्षित होती हैं किन्तु उनमें भाषा के जिस स्वरूप को सर्वमान्य प्रामाणिकता मिली हुई है, उसे ही शीर्षस्थानीय मान कर उसे संवैधानिक मान्यता प्रदान की गई है। यों तो 'बारह कोस पर बोली बदल जाने' की कहावत सर्वत्र प्रचलित है फिर भी उसका एक मानकर स्वरूप अवश्य निर्धारित किया जा सकता है जिसे अंगी रूप में मान्यता देना सहज सुलभ है। जब इंग्लैंड के एक विशिष्ट भूखण्ड में बोली जाने वाली अंग्रेजी भाषा 'विश्वभाषा' बनने की क्षमता उपलब्ध कर सकी है तो राजस्थान प्रदेश की तथाकथित राजस्थानी भाषा यहां की आठ करोड़ जनता का नेतृत्व कैसे नहीं कर सकती? आज राजस्थानी भाषा भाषी लोग भारत तथा देश-विदेश के कोने-कोने में फैले हुए हैं जिनसे इस भाषा के सम्पर्क सूत्र व्यापक बने हैं और जिसके लिए प्रयुक्त 'मारवाड़ी' शब्द राजस्थानी भाषा तथा राजस्थान के निवासी तथा प्रवासी देशवासी का अर्थ ध्वनित करने लगा है। यदि मारवाड़ी भाषा को ही राजस्थानी भाषा का प्रतीक अथवा मानक स्वरूप मान कर उसे राजस्थानी के रूप में स्वीकार कर लिया जाए तो वह अपने अभिधेय अर्थ में मरूप्रदेश की भाषा का वाचक शब्द होते हुए भी अपनी लाक्षणिकता में 'राजस्थानी' भाषा का अर्थ ध्वनित कर सकता है। जब मेरठ के आसपास बोली जाने वाली 'खड़ी बोली' हिन्दी भाषा का जामा पहन कर राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन हो सकती है तो राजस्थान प्रदेश का प्रतिनिधित्व करने वाला 'मरूस्थलीय भू भाग' अपनी साहित्यसम्पदा और भाषा-वैभव के आधार पर 'राजस्थानी' भाषा का पर्याय क्यों नहीं बन सकता? यदि राजस्थान प्रदेश के लिए राजस्थानी भाषा की संवैधानिकता स्वीकार करानी ही है तो हमें उदारमना होकर गंभीरतापूर्वक इस समस्या का समाधान ढूंढना ही पड़ेगा अन्यथा यह प्रश्न भविष्य में भी इसी प्रकार अधर में झूलता रहेगा जैसा कि अब तक झूलता रहा है। बहुत संभव है कि अपनी संकीर्ण हठवादिता के कारण हम अपनी प्रादेशिक पहचान, सांस्कृतिक अस्मिता और भाषा विषयक गरिमा को भी नष्टप्राय: कर दें जिसने सहस्त्रों वर्षों के सुदीर्घकालीन इतिहास में अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रखने का गौरव प्राप्त किया है।

राजस्थान प्रदेश भारत की अस्मिता तथा विशिष्टता का अभिव्यंजक प्रदेश रहा है। वह हमारे राष्ट्र के पश्चिमोत्तर प्रवेशद्वार का रक्षक तथा विदेशी आक्रमणकारियों के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करने वाले संघर्षशील प्रहरी के रूप में उभरा है। स्वातंत्र्य प्राप्ति की पूर्वसंध्या में हमारा एक प्राण राष्ट्र जिन दो खण्डों (हिन्दुस्तान और पाकिस्तान) में विभक्त कर दिया गया, उसकी यातनाओं की अधिकांश पीड़ा राजस्थान प्रदेश को आज भी झेलनी पड़ रही है। इस प्रदेश को सद्भावनापूर्ण मन: स्थिति में रखने के लिए आवश्यक है कि उसे संकीर्णताग्रस्त भाषाविषयक आन्दोलनों से मुक्त रखा जाए ताकि वह भाषायी दुरभिसंधियों में उलझकर 'अन्य प्रदेशों' की भांति दो प्रदेशों के निर्माण की दिशा में उन्मुख अथवा अधोमुख होने के लिए कटिबद्ध न हो जाए। प्रदेश विभाजन के अनेक पक्षधर राजनयिक तो अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए ऐसा सोचने भी लगे हैं। उनके अंतर्मन में यह भावना शनै: शनै: पल्लवित भी होने लगी है कि जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर और उदयपुर की कमिश्नरियों को प्रमुखता देते हुए अजमेर एवं जयपुर के विशिष्ट जनपदीय क्षेत्रों में सम्मिलित से राजस्थान के पश्चिमोत्तर प्रदेश को 'मरूप्रदेश' के रूप में संवैधानिक मान्यता प्रदान की जा सकती है जिसके निर्माण के साथ-साथ राजस्थान प्रदेश को लेकर उत्पन्न की गई अथवा की जाने वाली अनेक कृत्रिम समस्याओं का सहज ही समाधान हो सकता है तथा प्रशासन के संचालन में भी 'चुस्ती' आ सकती है। उस स्थिति में 'राजस्थानी' भाषा के नाम पर खड़ा किया प्रादेशिक भाषा का कृत्रिम आन्दोलन भी धूमिल पड़ जायेगा क्योंकि 'मरूप्रदेश' की संभाव्यमान सर्जना में राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता के मार्ग में कोई बाधा नहीं पड़ेगी।

सच पूछा जाए तो राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता प्रदान कराने के लोकमत अथवा जनपथ में अधिकांशत: उन्हीं लोकनेताओं और विचारकों द्वारा व्यवधान उपस्थित किये जा रहे हैं जो हरियाणा, दिल्ली, मध्य प्रदेश तथा गुजरात की सीमाओं से जुड़े हुए हैं। इसका प्रमुख कारण यही है कि राजस्थान प्रदेश के पूर्वी तथा दक्षिणी भाग हरियाणवी, बृज, पंजाबी, खड़ी बोली और गुजराती आदि भाषाओं के विशेष सम्पर्क में रहने के कारण वे परम्परागत राजस्थानी भाषा का विरोध करते हैं। उनकी सोच सर्वथा निराधार तो नहीं है किन्तु प्रश्न यह है कि जिस भाषा को 'राजस्थानी' के नाम से प्रतिष्ठित किया गया है, वे उसे विशुद्ध रूप में बोलने में भले ही कुछ कठिनाई का अनुभव करें किंतु उसे समझने में तो उन्हें किसी भी प्रकार की अड़चन न तो होती है और न होनी चाहिए। उस स्थिति में उनका विरोध केवल औपचारिक विरोध सा प्रतीत होने लगता है।

कुछ वर्षों पूर्व हिन्दी भाषा के अस्तित्व को लेकर साहित्य के कुछ इतिहासकारों और विचारकों ने अपनी धाक जमाने अथवा मौलिकता प्रदर्शित करने के लिए इसी प्रकार का एक अनर्गल प्रश्न उठाया था कि हिन्दी भाषा के जिस स्वरूप को राष्ट्रभाषा अथवा राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित किया जा रहा है, वह तो मुख्यत: खड़ी बोली ही है अत: भारतेंदुयुग के पार्श्ववर्ती युग से ही हिन्दी साहित्य के इतिहास का शुभारंभ माना जाए। उनका तर्क था कि हिन्दी के आदिकाल से लेकर मध्यकाल तक जितनी भी काव्य रचनाएं की गईं, वे या तो डिंगल परम्परा की थी अथवा उनके ब्रजभाषा और अवधी भाषा का ही मेलजोल था अत: उसे आधुनिक हिन्दी से पृथक् मान कर ही हिन्दी साहित्य के उद्भव और विकास पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए। इस प्रकार के दृष्टिकोण अनेक बिंदुओं से बचकाने

प्रयास मात्र-से लगते हैं अत: इसे अप्रासंगिक मान कर यहां केवल उनका संकेत ही किया गया है । राजस्थानी भाषा के विरोधियों की मनोदशा में भी पूर्ववर्णित नवीन चिंतकों की अंतर्दृष्टि का ही साम्य परिलक्षित होता है।

देश विदेश के अनेक विद्वानों और भाषाशास्त्रियों ने जब राजस्थानी भाषा को स्वतंत्र अस्मिता प्रदान करने में कोई विवाद अथवा संकोच नहीं किया है तो फिर उसके अस्तित्व को लेकर नई-नई समस्याएं क्यों उत्पन्न की जा रही हैं? उनका कोई तर्कसंगत और व्यावहारिक समाधान नहीं दिखलाई पड़ता। राजस्थान प्रदेश की संवैधानिक भाषा के लिए कोई न कोई नाम तो चुनना ही पड़ेगा। जब उसके लिए पहले से ही 'राजस्थानी' नाम चुन लिया गया है जिसे निर्विवाद रूप से स्वीकार करने के लिए सभी लोग भले ही सहमत न हो किन्तु अधिकांश बहुमत तो उसी का समर्थन कर रहा है जो लोकतांत्रिक प्रशासन प्रणाली के अनुरूप है। ऐसी स्थिति में व्यर्थ का बखेड़ा कहीं 'राममंदिर' अथवा 'बाबरी मस्जिद' जैसा राजनीतिकरण अथवा विवाद अथवा अखाड़ा बन कर कश्मीर समस्या के समाधान की भांति दीर्घसूत्री लघु संस्करण न बन जाए, इस दिशा की ओर भी हमें लोकहित की दृष्टि से उदारवादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता मिलने पर उसकी भिन्न-भिन्न बोलियों के विकास तथा उन्नयन में किसी भी प्रकार का अवरोध उत्पन्न नहीं होगा अपितु वे सभी बोलियां राजस्थानी भाषा-परिवार की सहयोगिनी बन कर उसकी स्नेहसिक्त ममता का ऐसा उपहार पा सकेंगी जिससे उनके उत्कर्ष और साहित्य-सृजन के अनेक आयाम विस्तृत हो सकेंगे। उनकी अस्मिता और प्रतिष्ठा उसी रूप में बनी रहेगी जिस रूप में हिन्दी प्रदेश में ब्रज, अवधी, भोजपुरी और खड़ी बोली आदि बोलियों की बनी हुई है। इसी प्रकार की स्थिति अन्य प्रदेशों की प्रादेशिक भाषाओं और बोलियों में भी दृष्टिगोचर होती है। हमारा इस प्रकार का सद्भावनापूर्ण सत्प्रयास विविधता से एकता की ओर बढ़ने का ही उपक्रम अथवा आदर्शस्वरूप हो सकता है जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र और प्रदेशों में सही तालमेल जम सकता है। राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता मिलने पर राष्ट्रभाषा हिन्दी को भी बल मिलेगा, यह एक निर्विवाद सत्य है।

अपने उद्भव और विकास के विभिन्न सोपानों से ऊपर उठकर अथवा उन्हें पार कर 'राजस्थानी' भाषा आज अपना गरिमापूर्ण गौरव स्थापित कर चुकी है जिसे किसी भी रूप में पीछे नहीं 'धकेला' जा सकता। उसका आदिकालीन और मध्यकालीन भाषा साहित्य इतना अधिक सुसमृद्ध एवं विशद है कि उसके रत्नकोष में अभिसंचित एवं सुरक्षित अनेक ग्रंथों पर अनेक वर्षों तक शोधकार्य किया जा सकता है। अकेली 'मारवाड़ी' अथवा मरुवाणी में भी जब विविधाविषयक साहित्यविद्याओं का भण्डार भरा हुआ है तो फिर राजस्थान प्रदेश के विभिन्न अंचलों में परिव्याप्त बोलियों के लोकसाहित्य का संकलन, सम्पादन और समीक्षात्मक मूल्यांकन किया जाए तो हमारी प्रादेशिक भाषा की समृद्धि संविधान की आठवीं अनुसूची में राजस्थानी भाषा को सम्मिलित कराने के आन्दोलन में और भी अधिक सशक्त एवं सफल हो सकती है। ऐसा करने के लिए हमें समवेत स्वरों से अपनी आवाज बुलन्द करनी पड़ेगी तभी हम उसे संवैधानिक मान्यता प्रदान करा सकेंगे। इस कार्य में हमारे शुभ संकल्प ही प्रेरक हो सकते हैं जिन्हें 'मनसा, वाचा, कर्मणा' के त्रिवेणी संगम से जोड़ना होगा।

राजस्थान प्रदेश के निवासियों को एक साथ संगठित होकर अपना प्रथम प्रयास तो यही करना चाहिए कि राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता मिल सके किन्तु उस मान्यता के मिलने के पश्चात् उसे विकासशील और समुन्नत बनाने का दायित्व और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। जिस प्रकार 'स्वराज' और स्वतंत्रता की उपलब्धि ही सुखशांति तथा विकास की चरम सिद्धि अथवा लक्ष्यसाधना नहीं हो सकती, उसी प्रकार राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता ही हमारे कर्त्तव्य की 'इतिश्री' नहीं कही जा सकती। 'स्वराज' को 'सुराज्य' में परिवर्तित करने तथा उसे जनकल्याण अथवा लोकहित के संदर्भों से जोड़ने के साथ-साथ हमें उसे उन सांचों में भी ढालना होगा जिनमें लोकतांत्रिक शासन-प्रणाली की सफलता सार्थक अथवा क्रियान्वित होती है। इस तथ्यों को ध्यान में रख कर ही हमें अपने प्रादेशिक भाषा साहित्य के अभ्युत्थान के लिए भी दृढ़संकल्पी बनना पड़ेगा। इसके लिए त्याग और तपस्या की क्रियाशीलता भी अनिवार्य है। स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए हमारे जिन देशभक्तों ने अपने प्राणोत्सर्ग कर उसकी उपलब्धि की थी उसकी नकली कीमत जिन स्वार्थी हथकण्डों और भ्रष्टाचारों की काली करतूतों से आज के लोकतंत्र में चुकाई जा रही है वह निश्चय ही हमारे लिए नैतिक पतन, पाशविक जघन्यता तथा आत्मघाती आक्रमण का ही पर्याय बन रही है। हमें भय है कि भाषा साहित्य के सारस्वत मंदिर में भी प्रविष्ट होने वाले स्वार्थी तत्व उसे पथभ्रष्ट एवं पतनोन्मुख न कर दें, जिसके लिए विशेष प्रकार की सजगता और सावधानी बरतने की आवश्यकता है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन कराने के लिए जिन साहित्यसाधकों ने उसे सक्षम एवं समृद्ध बनाया था, क्या वही साधना और तपस्या उसके वर्तमान साहित्यकारों तथा उन्नायकों में अवशिष्ट रह गई हैं? अनेक स्थलों पर तो साहित्य राजनेताओं का अंधानुगामी मात्र बन कर रह गया है जो उनके इशारों पर नाचने में ही अपनी परम सिद्धि समझने लगा है जबकि उसे स्वत: ही समाज और संस्कृति का नियामक होना चाहिए। हमें राजस्थानी भाषा के साहित्य में भी ऐसी ही चेतना प्रस्फुरित करनी पड़ेगी। जो अपनी आंचलिकता को सुरक्षित रख कर उसे राष्ट्रहित की भावनाओं की भूमिका से जोड़ सके और उसमें प्रादेशिकता के राष्ट्रव्यापी लोकतांत्रिक तत्वों की भास्वरता चमक उठे। इस प्रकार की मानसिकता का स्वस्थ वातावरण तभी बन सकता है जब उसे प्रथमत: संविधान की आठवीं अनुसूची में संवैधानिक मान्यता मिल सके। उस मान्यता की उपलब्धि में सभी का सक्रिय सहयोग अनिवार्यत: वांछनीय है और उसी के बल पर राजस्थान की विधानसभा में एतद्विषयक प्रस्ताव पारित कर उसे लोकसभा तक पहुंचाया गया है ताकि राजस्थानी भाषा को भारतीय संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्मिलित किया जा सके। क्या लोकसभा के कर्णधार जन प्रतिनिधि सांसद इस जनादेश की अनुपालना कर अपने कर्त्तव्यबोध और दायित्व का सफल निर्वहन करने का साहस जुटा सकेंगे? ●

नारी स्वतंत्रता : सीमाएं और उपयोग

भीमसेन त्यागी

नारी के अन्तर में स्नेह और समर्पण का वह कोष संजोया हुआ रहता है कि कोई भी हृदय उसे पाकर अन्य संपदाओं को तुच्छ दृष्टि से देख सके।

कहा जाता है- विशेष रूप से भारतीय नारी के विषय में - कि उसकी स्नेहदान और समर्पण की भावना दास भावना है, जो पुरुष द्वारा उस पर आरोपित है, और क्योंकि युग-युगों से आरोपित है इसलिए स्वयं नारी भी उसमें बन्धन अथवा असुविधा का आभास नहीं पाती। सच तो, भावना के इस पक्ष पर गर्व करने के अवसर तक वह ढूंढती है : उसकी चेतना इस जंजीर को आभूषण रूप में स्वीकारने की इतनी अभ्यस्त हो चुकी है।

इस कथन में सत्य है; पर आंशिक ही। नारी में दास-वृत्ति है, वह पुरुष की आरोपित भी है, नारी उसे आभूषज रूप में स्वीकारती भी है, और इस वृत्ति का स्थान कोई दूसरी स्वस्थ वृत्ति ले यह हमारे समाज की एक बड़ी आवश्यकता, कहें अनिवार्यता है; किन्तु इससे बड़ी हमारी अनिवार्यता है कि नारी की दासवृत्ति और समर्पण वृत्ति के बीच स्पष्ट और व्यावहारिक सीमा-रेखा की खोज हो।

नारी आर्थिक क्षेत्र, समाज संपर्क और दैनिक व्यवहार में पुरुष के आदेश-निर्देश की बन्दिनी न होकर भी अपनी इस समर्पण-वृत्ति को सुरक्षित रख सकती है और यही वे तीन बिन्दु हैं जिनसे बनने वाली रेखा हमारी इच्छित सीमा रेखा होगी। इस रेखा के एक ओर वह दास वृत्ति है जिसकी जंजीरें तोड़े बिना हम पशु जैसे होंगे और दूसरी ओर वह समर्पण-वृत्ति है जिसके अभाव में स्त्री-पुरुष का व्यवहार सुख-सुविधा के क्रय-विक्रय की दुकान से अधिक न रह जाए।

समर्पण की इस भावना का लोप युग की महानतम हानि हो सकती है, किन्तु ऐसा कुछ यहां नहीं है जिसके लिए चिंता की जाए। नारी की यह भावना प्राकृतिक है, और इसलिए 'आधुनिक नारी का घोष कितना भी भयभीत करने वाला क्यों न हो, यह भावना उसमें डूब कर कुछ देर के लिए अदृश्य हो सकती है पर सदा के लिए समाप्त नहीं हो सकती। समर्पणमयी नारी के अपवाद भी शायद पाये जाएं, लेकिन अपवाद कभी किसी सत्य को असत्य ठहरा सके हैं ?

अभी तक नारी दासवृत्ति से बंधी रही है। यह सम्भव नहीं है कि स्वतंत्रता का उपयोग करने की क्षमता का उसका कटोरा सीमित हो ? सीमित कटोरे में स्वतंत्रता के दूध की धारा अबाध रूप से गिरने देंगे तो वह कटोरे से बाहर व्यर्थ नहीं बह चलेगा ? यह एक ऐसा प्रश्न है जो नारी की सीमित स्वतंत्रता की वकालत करता है, लेकिन स्वतंत्रता भी सीमित नहीं होती। हां संयमित अवश्य होती है, उसे होना चाहिए।

किन्तु यह कटोरे की सीमाओं को देखते हुए दूध के व्यर्थ बह जाने की शंका करना भ्रम से अधिक कुछ नहीं। प्रश्न नारी को स्वतंत्रता देने का नहीं, ऐसी पृष्ठभूमि तैयार करने का है जिसमें नारी अपनी स्वतंत्रता के महत्व को जाने, समझे और उसे पाने के लिए सचेष्ट हो। स्वतंत्रता किसी को कोई प्रदान नहीं कर सकता, वह स्वयं प्राप्त की जाती हैं। नारी को स्वतंत्रता देने का प्रयास भी अप्राकृतिक होगा। वह स्वतंत्रता एक विशेष की परतंत्रता से अधिक कुछ नहीं।

यहां एक बच्चे और दो अध्यापिकाओं की एक कथा याद हो आयी। माण्टेसरी स्कूल का एक बच्चा ताक पर रखे खिलौने को उतारने के लिए उत्सुक है। ताक ऊंचा है। इसलिए उसने मेज को उधर खींचा और उस पर चढ़ कर खिलौना उतारने की चेष्टा कर रहा है। वह एड़ी उठाये पंजों के, बल्कि अंगूठों के बल खड़ा है और उसकी थरथराती उंगलियां कांपती सी खिलौने की ओर बढ़ रही है। खिलौना उसके हाथ आए इसके पहले खतरा है कि वह डगमगा कर नीचे न आ रहे। तभी कमरे में आ जाती हैं दो अध्यापिकायें। बच्चे को उस स्थिति में देख एक ने कहा, 'शाबाश डब्बू शाबाश। बस पहुंचने वाला ही है तुम्हारा हाथ।'' सहारे पर बच्चा थोड़ा और उभरता है और खिलौना पाकर सफलता की मस्ती में झूम उठता है। तभी दूसरी अध्यापिका पहली से कहती है, ''तुमने स्वयं ही खिलौना क्यों न उतार दिया ? बच्चा गिर जाता तो ?''

दूसरी उत्तर देती है- ''मैं उतार देती तो डब्बू में उगती आत्म विश्वास की भावना दब जाती। वह हानि मेज से गिर कर चोट लगने से कहीं अधिक होती।''

इस कथा का प्रयोजन यहां यही है कि नारी की भी स्वतंत्रता हमें स्वयं नहीं देना है बल्कि ऐसी पृष्ठभूमि बनाने का प्रयास करना है कि जिससे नारी ही उसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो उठे। ऐसी पृष्ठभूमि बनाने का अर्थ होगा : उन तीन बिन्दुओं से आकार पाने वाली रेखा का स्पर्श करना अर्थात् आर्थिक क्षेत्र, सामाजिक सम्पर्क और दैनिक व्यवहार में नारी पुरुष की आश्रिता न होकर स्वाबलम्बिनी बने। और इसका अर्थ भी नारी के लिए समुचित शिक्षा और आलोक-बोध [illegible] व्यवस्था करना। दूसरे शब्दों में ऐसी शिक्षा नहीं जो उसे साक्षर [illegible] बहुज्ञ मात्र बना सके और पुरुष जिसका उपयोग अपने मानसिक सुख-सुविधा संतोष के लिए किया करे। बल्कि ऐसी शिक्षा जो नारी को सम्मानपूर्वक अपनी रोजी कमाने, स्वतंत्रता पूर्वक अपने सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करने और पुरुष के साथ समान स्तर पर मित्रवत् व्यवहार करने की क्षमता दे सके।

ऐसी शिक्षा, यह क्षमता, नारी को प्राप्त होगी तो स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अतिरिक्त संघर्ष की आवश्यकता न पड़ेगी। हां स्वतंत्रता के उपयोग करने की क्षमता का कटोरा सीमित होने का प्रश्न सामने आ सकता है। सम्भव है कि स्वयं प्राप्ति करके भी नारी स्वतंत्रता को सुरक्षित न रख सके। तब क्या दूध के व्यर्थ बह चलने का खतरा फिर उपस्थित नहीं होता ? होता है। पर क्योंकि अपने श्रम और सामर्थ्य से उसने प्राप्त किया है, इसलिए अधिक देर उसे बहता देख न सकेगी वह स्वयं उपयुक्त बड़े पात्र की व्यवस्था कर उठेगी। ऐसे पात्र की खोज का समय प्रयोगका समय होगा और प्रयोग में हुई हानि तो इन्वेस्टमेंट होती है।

''स्वतंत्रता सीमित नहीं, संयमित हो सकती है। उसे होना चाहिए।' इस कथन के 'सीमित' और संयमित की सीमा-रेखा कहां है ? और इस 'चाहिए' का अर्थ ? सीमा रेखा का प्रश्न ही नहीं, क्योंकि सीमित स्वतंत्रता और संयमित स्वतंत्रता दोनों दो भाव हैं, एक नहीं। स्वतंत्रता के सीमित होने का अर्थ है उसमें परतंत्रता मिश्रित रहना और जहां परतंत्रता का भाव आया कि फिर स्वतंत्रता तो रह ही नहीं जाती।

संयमित स्वतंत्रता को समझने के लिए असंयमित स्वतंत्रता को पहिले परखें। इसका अर्थ है , अपनी स्वतंत्रता को इतना आगे ले जाना कि वह दूसरों की स्वतंत्रता का गला घोटने पर उतर आये और ऐसी असंयमित-स्वतंत्रता का बहिष्कार ही संयमित स्वतंत्रता है।

संयमित स्वतंत्रता का अधिक स्पष्ट अर्थ हुआ हम इस सीमा तक स्वतंत्र हों कि कोई हमारी स्वतंत्रता में बाधक न बने, साथ ही हम इस सीमा तक स्वतंत्र रहें कि हम स्वयं किसी की स्वतंत्रता में बाधक न बन पायें। यही तो स्वतंत्रता है जो नारी को, सबको चाहिए।●

अवकाश का महत्व : ऊँचाईयां छूने का माध्यम

✍ श्रीमती ज्ञानवती लाठ, कोलकाता

अवकाश के समय क्रीड़ा विनोद के रूप में स्वत: स्फूर्त जिज्ञासा से प्रेरित हो जिन विषयों या वस्तुओं में प्रवृत्त होते हैं उन्हें शौक की आख्या दी गई है।

अवकाश : प्रभाव एवं उद्देश्य

अवकाश का समय जीवन का एक ऐसा अंग है, जिसमें किया गया कार्य संभार हमारे समस्त अस्तित्व पर प्रभाव डालने की क्षमता रखता है। कारण क्रीड़ा विनोद के लिए शौक से किए जाने वाले कामों में एक सहज और अनायास भाव विद्यमान रहता है, जो उन्हें अपने आप में आनन्ददायक बना देता है- किसी दूसरे उद्देश्य की अपेक्षा नहीं रखता। इसमें जीवन में एक सार्थकता सी आ जाती है।

स्वयं प्रेरित रूचिपूर्वक किये गये काम व्यक्ति को तो आत्म संतोष देते ही हैं, साथ ही हमारी संस्कृति तथा सभ्यता के विकास में भी विशेष सहायक हुए हैं। स्वयं प्रेरित जिज्ञासु वृत्तियों की क्रियाशीलता बच्चे में एकनिष्ठता तथा कर्मठता पैदा करती है तथा वह अपने विकास का मार्ग अपने आप खोजता रहता है। उसकी अचेतन क्रियाशील वृत्तियां प्रतिदिन नये-नये आविष्कार करने की चेष्टा करती है। वयस्कों की दृष्टि से चुपचाप अक्रियाशील बैठा हुआ बालक भविष्य का रवीन्द्रनाथ टैगोर या आइन्सटाईन भी हो सकता है। पर अवकाश के चिन्तनशील समय में वयस्क लोग हर समय बाधा डालते रहते हैं और समझते हैं कि वे बच्चे को सिखा रहे हैं।

शौक एवं प्रामाणिक उपलब्धि

साहित्य की बड़ी-बड़ी रचनाओं तथा विज्ञान के युग परिवर्तनकारी अन्वेषणों में शौक का बहुत बड़ा हाथ रहा है। महानुभाव बंकिमचंद्र, जिन्होंने बंगला-साहित्य को नई प्रेरणा प्रदान की, भारत सरकार के क्लर्क थे। साहित्य-सृजन इनके अवकाश के समय का शौक था। विज्ञान-जगत में नवीन पथ प्रदर्शन करने वाले मनीषी आइन्सटाईन भी किसी बैंक के क्लर्क थे। गणित तथा पदार्थ-विज्ञान के प्रश्नों को सुलझाने में उन्हें विशेष रूचि थी। बाद में वही उनके कार्य का क्षेत्र बन गया।

रूचिकर कार्यों में व्यक्ति की सारी शक्तियां क्रियाशील हो जाती हैं। थकावट की जगह उसे कार्य में विश्राम तथा शान्ति की अनुभूति के साथ-साथ नूतन प्रेरणाएं भी मिलती रहती हैं, जो कठिन-से-कठिन काम को भी सहज बना देती हैं।

एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक के शब्दों में-

It should reveal to child by his initiative. It is the satisfaction of having mastered manageable things and the relaxation that comes from moving in an element where one feels instinctively at home.

शौक का प्रादुर्भाव एवं खेल-क्रीड़ा

बच्चों में भी शौक का प्रादुर्भाव अवकाश के समय खेल-क्रीड़ा के रूप में ही होता है। उन्हें अपनी रूचि की वस्तुएं संग्रह करने का बड़ा शौक होता है। साधारणत: फूल-पत्ते, तितलियां, शंख, पेन्सिलें, सिक्के, गुड़िया, रेल तथा ट्राम की टिकटें, सिगरेट और माचिस के डिब्बे, चिड़ियों के पंख आदि इनके संग्रह की वस्तुएं होती हैं। कुछ बच्चों को कागज काटना, प्लास्टीसन का माडल बनाना, चित्रकारी करने का शौक होता है। कुछ बच्चों को पढ़ने का तथा विज्ञान के विभिन्न प्रयोग करने का शौक होता है। और जिन्हें संग्रह के साथ वस्तुओं के संचालन की भी रूचि होती है, वे फोटोग्राफी, विद्युत, फिजिक्स, केमिस्ट्री आदि छोटे-छोटे प्रयोगों का शौक रखते हैं।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि : विभिन्न परिप्रेक्ष्य

मैकडुगल आदि मनोवैज्ञानिकों ने बच्चों में संग्रह को और होनेवाले इस सुझाव को अधिकारवृत्ति का एक रूप समझा। पर सी.डब्ल्यू. बेलेन्टाईन, जे.एम. स्टीफेन आदि बाल-मनोविज्ञान के शास्त्री सैकड़ों बच्चों की रूचि का अध्ययन कर इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि बच्चा अपनी जिज्ञासा से प्रेरित होकर अपनी रूचि की वस्तुएं संचय करता है, अधिकारवृत्ति से प्रेरित होकर नहीं। वह अपनी संग्रहित वस्तुओं का सूक्ष्म रूप से अध्ययन करता है, इनका वितरण उसमें त्याग तथा आदर्श पैदा करता है और इनसे प्राप्त ज्ञान उसकी जिज्ञासावृत्ति को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ उसमें आत्म-विश्वास, आत्मनिर्भरता तथा अनुशासन पैदा करता है।

बेलेन्टाईन के एक छात्र ने उन्हें बताया कि जब वह बच्चा था, उसे स्टाम्प-सिक्के आदि संग्रह करने का बड़ा शौक था, पर बड़े होकर जब उसे उत्तराधिकार स्वरूप वही चीजें उसके पिता से मिलीं तो उसने समस्त संग्रह वितरण कर दिया। उसमें उसे कोई रूचि नहीं रह गई थी, क्योंकि उसके स्वच्छन्द स्वयंप्रेरित संग्रह में उसके पिता हर समय अपने सुझावों द्वारा उसकी प्रेरणाओं को कुण्ठित करते रहते थे। बेलेन्टाईन साहब का कहना है कि बच्चों की इस संग्रह वृत्ति को अनायास सहजभाव से बच्चे पर छोड़ दिया जाए तो उसकी यह वृत्ति उसकी शिक्षा तथा उसके व्यक्तित्व

के समुचित विकास के उपयोग में लाई जा सकती है।

समसामयिक परिवेश और सहजवृत्ति का विघटन

आजकल समय काटने की दृष्टि से नृत्य, गान, चित्रकला आदि की ऐसी संस्थाएं खुली हैं, जिनमें माता-पिता बच्चों को शौक पैदा करने की दृष्टि से दाखिल कर देते हैं। इसके सिवाय शौक पैदा करने के अनेक खर्चीले तथा चमकीले साधनों वाले हॉबी-सेन्टर भी खुल गए हैं। इस धांधली में शौक का वह सहज रूप उपेक्षित-सा होता जा रहा है जिसके मूल में स्वच्छन्दता और किसी विधि-विहित सीमा की संकीर्णता से स्वाधीन होने का भाव प्रधान था। जिन विनोदमयी क्रीड़ाओं से शौक विकसित होता था, वे धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही है।

बीसवीं सदी फण्ड के डायरेक्टर, आस्टय हेक्स्चर ने बच्चों की रूचि के सम्बन्ध में सम्प्रति की हुई खोज पर बोलते हुए कहा-

"Leasure is a quality. Life capable of pervading in some dagree a person's whole existence for recreation and hobbies that combine a high degree of spntaneity, a sense of unforced effort and a sense of enjoyment of work involved for its own sake not only give pleasure but have meaning for the present and for the future." (Introduction to twentieth century fund report)

माता-पिता या शिक्षक भी बच्चों की रूचि का अध्ययन उनकी शिक्षा में प्रगति लाने की दृष्टि से कर सकते हैं। स्कूलों में उन्हें एक दिन पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अपने प्रिय विषय में प्रवृत्त होने की स्वतंत्रता दी जा सकती है।

ज्ञान का सहज विकास : एक मनोवैज्ञानिक प्रयोग

विज्ञान, चित्रकला, बागवानी, फूल सजाना, पशु-पक्षियों का निरीक्षण तथा उनको पालने का ज्ञान, पुस्तकालय, संगीत, नृत्य, अभिनय, प्रतियोगिता, फोटोग्राफी भाषण, अनुकृति, टाईप राइटिंग, सिलाई, पेपर कटिंग वाद्ययंत्रों का रूचि के अनुकूल ज्ञान, यहां तक कि इतिहास और भूगोल का वातावरण भी इतना रूचिकर और सुन्दर बनाया जा सकता है कि बच्चों में रूचि तथा विश्व के प्रति और मनुष्यों के जीवन के प्रति एक नया दृष्टिकोण पैदा किया जा सकता है।

रूचिकर कार्यों में बच्चों को रचनात्मक वृत्ति के विकास के सक्रिय रूप से सम्बन्धित एक विद्यालय की हॉबी क्लास में मैंने अध्ययन किया था। वहां छुट्टी के दिन क्लास प्रथम से चतुर्थ तक के बच्चों की हॉबी क्लास होती है। उसमें नये-नये प्रयोग करने की चेष्टा की जाती है तथा बच्चों की रूचि को दृष्टि में रख, अलग-अलग सहज शिक्षण संदर्भ सृष्टि कर, चित्रकारी, नृत्य, विज्ञान, फोटोग्राफी, पुस्तकालय, संगीत, टाइपराईटिंग, सिलाई, वाद्य यंत्र, अभिनय, बागवानी, फूल सजाना, पशु-पक्षियों का निरीक्षण तथा उनको पालने का ज्ञान, सिलाई एवं वस्तु-शिल्प की क्लासें लगती हैं। तथा बाल सभा के माध्यम से बच्चों में भाषण, अनुकृति तथा तर्कस्पर्द्धा की स्वाभाविक अभिवृद्धि का प्रयास किया जाता है।

बच्चों के रूचि-विकास को सहज प्रश्रय देने हेतु संगीत का ज्ञान बड़ा लाभप्रद है। वहां सी प्रगति-प्रभाव को दृष्टि में रख सर्वप्रथम बच्चों को संगीतज्ञ वाद्य-यंत्रों की पहचान कराते हैं तथा प्रसिद्ध संगीतज्ञों के वाद्य यंत्र तथा संगीत उन्हें सुनाते हैं। क्योंकि टेप से विभिन्न गानों को रिकार्ड करना सहज तथा सुविधाजनक है। इसके पश्चात बच्चों को संगीत सिखाया जाता है, उसे टेप कर फिर तत्काल उसे सुनाया जाता है। बच्चे अपने संगीत के टेप रिकार्डर से सुनकर बहुत आह्लादित होते हैं तथा नये-नये संगीत सीखने को उत्सुक होते हैं। सीखने के इस क्रम गीत से उनका संतोषजनक विकास होता है।

पुस्तकज्ञ बच्चों को पुस्तक वितरण से पहले पुस्तकों के विषय प्रकार तथा तत्सम्बन्धी साधारण ज्ञान देते हैं। जैसे रामायण क्या है? गीता किस विषय की है? भागवत किस प्रकार का ग्रन्थ है? फिर पुस्तकालय की विशेष कक्षाएं लगती हैं, जिनमें बच्चों में अधिकाधिक पुस्तकें पढ़ने की रूचि पैदा की जाती है। उन्हें पुस्तकों के नाम, विषय वस्तु एवं लेखक की जानकारी दी जाती है। यह सीखने का दूसरा स्तर है। फिर सम्पादक, प्रकाशक, मूल्य, पृष्ठ आदि की जानकारी स्वाभाविक रूप से पुस्तकज्ञ के थोड़े सहयोग से वे स्वत: सीखते चले जाते हैं। इस प्रकार विकास का स्तर बढ़ता है।

प्रत्येक दूसरे सप्ताह पढ़ी हुई पुस्तकों के बारे में उनसे पूछा जाता है प्रत्येक महीने के अन्त में महीने भर की पढ़ी हुई पुस्तकों की जांच होती है, जिससे वे समस्त पढ़ी पुस्तकों की बाबत जानकारी रखने को सचेष्ट होते हैं। प्रत्येक महीने बच्चों के हर ग्रुप में साहित्य की प्रतियोगिता होती है। उनकी जांच प्रौढ़ मनोवैज्ञानिकों के द्वारा होती है और उसमें निर्णीत रचनाओं को विद्यालय से निकलने वाली बच्चों की पत्रिका में छापकर उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है। इस विधि से बच्चों में संरचनात्मक संप्रेषण-क्षमता की वृद्धि होती है तथा उसके भीतर के संभावनाओं को प्रज्ञात्मक आयाम मिलता है। पुस्तकालय के इस विशेष कक्षा का प्रारम्भ करके विद्यालय ने एक नई पद्धति का ऐतिहासिक प्रारूप उपस्थित किया है, जिसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव बच्चों के निरन्तर ऊपर उठते प्रगति-स्तर को आभासित करना है।

प्रगति स्तर : स्वाभाविक क्रमिकता

उस विद्यालय में प्रत्येक सप्ताह बच्चों से पूछा जाता है कि क्या सीखना चाहते हैं? बच्चे जिस विषय को सीख रहे हों उसमें उनकी रूची नहीं देखी जाती है तो उन्हें दूसरी विषय-वस्तु में भेज दिया जाता है। यह क्रम तब तक चलता है जब तक कि विशेष विषय में उनकी प्रगति नहीं देखी जाती। जब उनकी मानसिकता किसी खास विषय में केन्द्रित होती देखी जाती तब उन्हें उसी विषय में निरन्तर विकसित होने दिया जाता।

एक दिन कुछ बच्चे दरवाजे पर संकुचित से खड़े हुए थे। उन्हें बुलाकर पूछने पर मालूम हुआ कि वे फूल सजाना (Cut Flower Decoration) सीखना चाहते हैं। उन दिनों आज की तरह फूल सजाने की कोई प्रथा नहीं थी और शिक्षिका को स्वयं उसका कुछ भी ज्ञान नहीं था, किन्तु उत्साह बहुत था। उत्साह की नई शक्ति से किताबें खरीदीं, फूलदानियां लाई गईं स्वयं सीखा तथा बच्चे को भी सिखाया। नमूने में सबसे बड़ा आश्चर्य था बच्चों की अपनी कल्पना-शक्ति, अद्‌भुत-अद्‌भुत फूलों की वे सजावट करते थे। ''अंगूर खट्टे हैं'', ''मैं भी कुछ कहूं'', ''मेरी टमटम गाड़ी'' आदि की तस्वीरें आज भी उस स्कूल में रखी हुई हैं, जो बच्चे के रूचि से सीखने की महत्ता का उदाहरण है। तीन महीने बाद वहां एक प्रदर्शनी की गई, उसमें ''हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड'' का मत इस प्रकार था-

Uncommon Exhibition of common things"

"Work done by children high lighted an exhibition of flower arrangements. They have sought to arrange common and inexpensive things in an uncommon and beautiful way even things like brinjal, fried maize, dry branches, stone chips and gourd."

बच्चे की स्वयंप्रेरित रचनात्मक वृत्ति का दूसरा अनुभव मुझे शिक्षिका के नाट्य विभाग में हुआ। ''कंजूस नाना'' ड्रामा का प्रधान पात्र नानाजी बीमार पड़ गए। हाथ में सिर्फ तीन दिन थे और ड्रामा का तीन चौथाई हिस्सा नानाजी के ही जिम्मे था। शिक्षिका ने बालसभा में घोषणा की कि नाटक होना असंभव है। नानाजी बीमार हैं, अब फिर कभी करेंगे। शर्म की बात है कि कार्ड बंट गए हैं, पर निरुपाय हैं। बीच में ही एक बच्चे ने हाथ उठाया। पूछने पर उसने बतलाया कि नानाजी का पार्ट वह कर लेगा। अद्‌भुत पार्ट किया उस बच्चे ने। आज भी उस बच्चे के अभिनय की स्मृति शिक्षिका को बच्चों के भीतर निहित अद्‌भुत शक्तियों की झांकी दिखलाई देती है और मन में दृढ़ विश्वास है कि किसी भी कार्य को स्वच्छन्दता विकसित करती है तथा विधि-निहित सीमाओं के बन्धन उसकी स्वत: प्रेरणा (Spontaneity) को नष्ट कर देते हैं।

बालक के व्यक्तित्व का विकास एवं शिक्षिका का दायित्व

विज्ञान के छोटे-छोटे प्रयोग बच्चे को भावी जीवन में इस विषय के प्रति सचेतन बनाने में सहायक होते हैं, परन्तु इसमें हमको बच्चे की महत्ता स्वीकार करनी पड़ेगी और उनमें स्थित योग्यताओं के विलक्षण विस्तार का ज्ञान स्वीकार करना पड़ेगा। युगों से होती आई घटनाओं वर्तमान की उलझनों तथा भविष्य की संभावनाओं को बालक हस्तामलकवत सीखता जाता है। परन्तु बालक को समझने तथा उसके व्यक्तित्व को पूर्ण आदर देकर सिखाने के लिए आवश्यकता है स्नेहशील, धैर्यवान, जिज्ञासु तथा गतिशील वृत्ति वाले शिक्षकों की।

चार साल के छोटे बच्चे की अद्‌भुत क्षमता में पूर्ण विश्वास कर उसके विकास का पूर्ण प्रयत्न करने वाली एक ऐसी शिक्षणशाला है 'बाल निलय' जहां प्रति बृहस्पतिवार को चार साल के बालक को एक स्वच्छन्द मुक्त किन्तु अनुशासनपूर्ण वातावरण में उसकी रूचि के अनुसार विज्ञानादि विषय सीखने की उन्मुक्तता है। इस बाल मन्दिर में न सिर्फ बच्चा, वरन् माता-पिता की समस्याओं को समझने के साथ-साथ उन्हें बच्चे की रूचि तथा उसके पूर्ण व्यक्तित्व के विकास से अवगत किया जाता है।

बाल वैज्ञानिक गतिशील व्यक्तित्व का आदर्श

अमेरिका से दो साल की उम्र में माता-पिता को छोड़ कर आया हुआ अमिताभ आज एक बाल वैज्ञानिक सा लगता है। उम्र है सिर्फ सात साल। जब समय मिलता है, विज्ञान का अन्वेषण करता रहता है। नया अन्वेषण होगा तो रात के ११ बजे तक जागता रहता है जबकि उसके सोने का समय है ४ बजे। अमिताभ मौण्टेसरी का एक छात्र था। उसने अपनी आदर्शवादी शिक्षिका की विज्ञानशाला में दो साल की उम्र से जाना शुरू किया था। वह बड़े बच्चों के कार्यों का उनके पास बैठकर चुपचाप अध्ययन करता था। चार साल से छ: साल तक एक दिन भी बृहस्पतिवार की क्लास में नागा नहीं की, किन्तु उसकी रूचि में इतनी गहराई लाने में उसके परिवार का भी स्कूल के साथ पूर्ण सहयोग रहा है।

बच्चों के गतिशील व्यक्तित्व के सूक्ष्म तथा कोमल तत्व का पूर्णांग विकास परिवार की सहायता के बिना असंभव है। स्कूल में प्रवीण आदर्शवादी शिक्षिका बच्चों के विकास के लिए उन्मुक्त एवं स्वाभाविक वातावरण तैयार कर सकती है। पर जब तक बच्चे को अपने रूचिकर कार्य करने की या तत्सम्बन्धी चर्चा सुनने की सुविधा प्राप्त न हो, बच्चा ज्यादा प्रगति नहीं कर पाएगा।

विज्ञान, अभिनय, चित्रकला, संगीत आदि विषय व्यक्ति की गहरी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है। इनकी संरचनात्मक उपलब्धि के लिए यदि स्वच्छन्द वातावरण बनाया जाए, तभी बालक की रचनात्मक वृत्तियां जागृत होती हैं, अन्यथा वे भीतर ही भीतर सुसुप्त रहती हैं।

मैडम मोण्टेसरी ठीक ही कहती हैं- ''वह (बालक) मसीहा है जो पतित पावन को ईश्वरीय आसन तक उठाने के लिए भेजा गया है।''●

संकल्प शक्ति के चमत्कार

✍ पुष्करलाल केडिया, कोलकाता

प्रत्येक मनुष्य में अलौकिक शक्तियों का भण्डार भरा पड़ा है। इन शक्तियों के बल पर वह असंभव को भी संभव बना सकता है, सब कुछ कर सकता है। आवश्यकता है इन शक्तियों को पहचानने की, जाग्रत करने की और इनका सदुपयोग करने की। मनुष्य जब इन्हें पहचान कर इनके दुरुपयोग की प्रवृत्ति अपना लेता है तब वह पतनोन्मुख होता है और अन्ततः अपना मान-सम्मान खोकर निराशा और पश्चाताप के अन्धकूप में जा गिरता है।

शरीर में सन्निहित अद्भुत शक्तियां जब अच्छे कार्यों में लगती है तो मनुष्य की कीर्ति का शिखर निर्मित होता है, उज्वल इतिहास बनता है और जनमानस में उसकी छवि श्रद्धास्पद बन जाती है।

प्रकृति प्रदत्त अलौकिक शक्तियों में से एक है संकल्प-शक्ति, जो मनुष्य के अन्तर्मन में निवास करती है। इसे विकसित करना, सिद्ध करना और कार्य सिद्धि के लिए प्रयुक्त करना मनुष्य की क्षमता पर निर्भर करता है। संकल्प शक्ति असंभव प्रतीत होने वाले कार्यों को भी संभव कर दिखाती है। अटूट संकल्पों से प्राप्त होने वाली सफलता संकल्पकर्त्ता को भी आश्चर्यचकित कर देती है।

संकल्प शक्ति के सन्दर्भ में एक रोचक कथा यहां उद्धृत है। एक बार भगवान बुद्ध के शिष्यों के मन में कुछ जिज्ञासाएं उत्पन्न हुई। एक शिष्य ने प्रश्न किया- ''भगवान! चट्टान से भी कठोर क्या है?'' बुद्ध ने उत्तर दिया- 'लोहा'। एक अन्य शिष्य पूछ बैठा- 'लोहे से कठोर क्या है?' बुद्ध ने कहा- 'अग्नि। वह लोहे को भी पिघला सकती है।' शिष्यों की जिज्ञासा बढ़ती गई। एक ने पुनः प्रश्न किया- 'अग्नि से बड़ी शक्ति क्या हैं?' बुद्ध शान्त भाव से बोले- 'जो अग्नि को ठंडा कर सकता है- वह जल है, किन्तु जल से भी प्रबल है वायु, जो मेघों को भी कहीं उड़ाकर ले जा सकती है। अब तुम अन्तिम और अपराजेय महाशक्ति के बारे में जानना चाहते हो तो वह है मनुष्य की संकल्प-शक्ति। वह सब कुछ कर सकती है, उसे कोई परास्त नहीं कर सकता।

संकल्प शक्ति के चमत्कारों की असंख्य कथाएं पुराणों और इतिहास ग्रंथों में भरी पड़ी हैं। वर्तमान युग में भी उसकी सफलता के प्रमाण हम आसानी से एकत्र कर सकते हैं।

एक और प्रेरक प्रसंग है। अमेरिका के अद्भुत साहसी पुरुष ग्लेन कलियस का उदाहरण सबके लिए अनुकरणीय है। वे दो भाई थे। एक दिन स्टोव जलाते समय स्टोव में भूल से किरासन की जगह पेट्रोल पड़ गया। परिणामस्वरूप ऐसा विस्फोट हुआ कि दोनों भाई बुरी तरह जल गये। एक ने तो घटनास्थल पर ही प्राण त्याग दिया और दूसरा अपंग हो गया। विकलांग होने पर उसने हिम्मत नहीं हारी और पढ़ाई शुरू की। सफलताओं की सीढ़ियां चढ़ता हुआ वह एम.ए. और डॉक्टरेट की डिग्री लेकर चर्चा का विषय बन गया।

उसकी उन्नति के मार्ग में कभी अवरोध आया ही नहीं। धीरे-धीरे वह विश्वविद्यालय के निदेशक के पद पर पहुंच गया। द्वितीय विश्वयुद्ध में उसने मोर्चे पर जाकर अपना कर्त्तव्य पालन करने में भी सफलता प्राप्त की। जब वह वृद्ध हो गया तो उसने अपनी सारी पूंजी लगाकर अपंग व्यक्तियों के लिए एक आश्रम की स्थापना की, जहां आज भी लगभग आठ हजार अपंगों के पढ़ने, आवास तथा स्वावलंबन-प्रशिक्षण की पूरी व्यवस्था है।

संकल्प-शक्ति को उद्दीप्त, प्रखर एवं प्रभावशाली बनाने में जिन तत्वों की प्रमुख भूमिका होती है, वे हैं आत्मबल, आत्मविश्वास, निष्ठा, आस्था, विचारशीलता, आत्मनिर्भरता, दृढ़ता और साहस इत्यादि। इन्हें संकल्प शक्ति का पर्याय कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं होगी। इन तत्वों के अभाव में जीवन में महत्वाकांक्षाओं के अंकुर पनपने ही नहीं पाते, क्रियाशीलता पंगु हो जाती है, तुच्छ कार्य भी कठिन प्रतीत होने लगते हैं और दिशाहीनता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

एक प्राचीन किंवन्दती है। चार दैवी शक्तियां पृथ्वी पर भ्रमण कर रही थीं। उनकी भेंट एक महात्मा से हो गई। महात्मा सिद्ध पुरुष थे। शक्तियों को पहचान कर उन्होंने प्रणाम किया। वे शक्तियां यह नहीं समझ पाई कि प्रणाम किसे किया गया है। उनके बीच विवाद उठ खड़ा हुआ। वे महात्मा के पास शंका-समाधान के लिए पहुंची। महात्मा ने उनमें से प्रत्येक का वास्तविक परिचय पूछा।

एक शक्ति बोली- 'मैं विधाता हूं, सबका भाग्य लिखता हूं। मेरी खींची हुई रेखाएं अमिट होती हैं।'

महात्मा ने प्रश्न किया- 'क्या आप अपनी खींची हुई भाग्य-रेखाओं को स्वयं मिटा सकते हैं या बदल सकते हैं।'

'ना' में उत्तर मिलने पर महात्मा बोले- 'तब मैंने आपको प्रणाम नहीं किया है।'

दूसरी शक्ति ने अपना परिचय देते हुए कहा- 'मैं बुद्धि हूं, विवेक की स्वामिनी हूं।'

महात्मा बोले- 'मैंने आपको भी प्रणाम नहीं किया, क्योंकि मैं इस सत्य को जानता हूं कि मार खाने पर बुद्धि आती है और फिर चली जाती है। मनुष्य ठोकर खाने पर ही सचेत होता है, समर्थ हो जाने पर बुद्धि से काम लेना बंद कर देता है।'

तीसरी शक्ति बोली- 'मैं धन की देवी हूं। मनुष्य को समृद्धि देती हूं, भिखारी को भी राजा बना सकती हूं।'

महात्मा मुस्कुराये- बोले- 'आप जिसको धन-वैभव से सम्पन्न करती हैं वह विक्षिप्त हो जाता है, विवेक खो बैठता है। लोभ, अहंकार, फिजूलखर्ची और दुराचार की प्रवृत्ति अपनाने लगता है। आपको भी मैंने प्रणाम नहीं किया है।'

अब चौथी शक्ति ने अपना परिचय दिया- 'महात्मन् ! मैं संकल्प-शक्ति हूं। मुझे धारण करने वाला कालजयी होता है। वह त्रैलोक्य की अलभ्य वस्तुएं सहज ही प्राप्त कर सकता है।'

महात्मा ने पुनः प्रणाम करते हुए संकल्प-शक्ति से कहा- 'माते ! आप महाशक्ति हैं, अजेय हैं, अनन्त हैं, कल्याणी हैं। आपको प्राप्त करके मनुष्य ईश्वर को भी पा सकता है। मेरा प्रणाम आपको ही निवेदित था।'

इतिहास और पुराणों की कथाएं यदि अविश्वसनीय लगती हों तो आंखों देखी घटनाएं उदाहरण स्वरूप सामने रखी जा सकती हैं। जापान के प्रसिद्ध सेनापति नोबुनागा में अपने सैनिकों में संकल्प शक्ति जाग्रत करने की अद्भुत क्षमता थी। वह संकल्प शक्ति और आत्मशक्ति के चमत्कारों से परिचित था। एक बार उसको युद्ध में पराजय मिली। उसके सैनिकों के मन में निराशा भर गई। शत्रु-सेना बहुत बड़ी थी। उससे दुबारा टकराने का साहस किसी में नहीं बचा था। नोबुनागा अपने सैनिकों को एक मंदिर में ले गया। उसने कहा- 'मैं एक सिक्के को तीन बार उछालूंगा। यदि सिक्का अधिक बार चित्त पड़ा तो जीत हमारी होगी और हम फिर शत्रु का मुकाबला करेंगे।'

तीनों बार सिक्का चित्त पड़ा। सैनिक खुशी से चिल्ला पड़े- 'जीत ! जीत!' उनमें एक नयी संकल्प शक्ति का संचार हुआ। उन्होंने पूरे जोश से जीते हुए शत्रु पर आक्रमण किया और विजयी हुए। नोबुनागा ने हर्ष से उन्मत्त सैनिकों की प्रशंसा करते हुए जब यह बताया कि उछाले गये सिक्के की दोनों पीठ पर एक निशान था तो सबके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वे मन ही मन अपने योग्य सेनापति की बुद्धि की प्रशंसा करने लगे। यह था संकल्प शक्ति का चमत्कार।

भारतीय संस्कृति में व्रतों का महत्व सार्वकालिक है। हिन्दू शास्त्रों में अनेक व्रतों का विधान और महत्व विस्तारपूर्वक कहा गया है। व्रत का अर्थ ही है संकल्प। व्रत निर्विघ्न पूर्ण होने पर कार्यसिद्धि सुनिश्चित होती है। धर्मानुष्ठानों में व्रतों का सीधा अर्थ है, आरंभ किये गये कार्य को पूर्ण करने का दृढ़ निश्चय।

'गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड' पढ़कर लोग मनुष्य के अद्भुत कारनामों पर दांतों तले अंगुली दबा लेते हैं, किन्तु यदि गहराई से चिन्तन करें तो तमाम असाधारण सफलताओं के मूल में संकल्प शक्ति ही दिखाई देगी। इतिहास प्रसिद्ध घटनाएं भी संकल्प शक्ति की सर्वोच्चता प्रमाणित करती है। गंगावतरण में भागीरथ का प्रयास, ब्रिटिश शासन की समाप्ति में महात्मा गांधी के आत्मविश्वासपूर्ण अहिंसावादी आन्दोलन की भूमिका, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस द्वारा आजाद हिन्द फौज का संगठन एवं विजय-अभियान जैसे असंख्य उदाहरण हमें संकल्प शक्ति की महिमा से अवगत कराते हैं।●

चुनाव

लो आ गये वो कहते थे कि आते हैं चुनाव
दीवारें शहर की सभी पुतवाते हैं चुनाव

राजन है जो प्रजा को वो आते हैं पूजने
त्योहार इस तरह का ही कहलाते हैं चुनाव

है नाम ओ निशान अलग पार्टियां अलग
पर मांग सबसे वोट की सुनवाते हैं चुनाव

छींकों पे जैसे बिल्लियां झपटे उसी तरह
तमाशे कई नित नए दिखलाते हैं चुनाव

सीने पे झेल सकती है आघात ये कितने
जनता के शब्र को यूं आजमाते हैं चुनाव

माइक पे माइक भोंपू पे भोंपू को चढ़ाए
हम आ गए गली-गली चिल्लाते हैं चुनाव

ये उनकी पोल खोलते वो खोलते इनकी
है पोल कितनी ढोल में बतलाते हैं चुनाव

पहले के परिणाम तो झेले किसी तरह
देखें अब परिणाम क्या ये लाते हैं चुनाव

छटपटाती जनता में राहत के वास्ते
आश्वासनों के झुनझुने बंटवाते हैं चुनाव

'रूसवा' चुनाव लब्ज की तासीर को न पूछ
इक खौफजदा सिहरन सी दौड़ाते हैं चुनाव

- जय कुमार 'रुसवा'
कोलकाता

विष्णुजी-लक्ष्मीजी को झगड़ो

✍ श्रीमती कुसुम खेमाणी, मुम्बई

एक बार विष्णुजी ओर लक्ष्मीजी मं ठणगी। लक्ष्मीजी बोल्या, 'मैं बड़ी' भगवान बोल्या- 'मैं बड़ो।' दोनूँ सोची मर्त्यलोक मं चालाँ, उठे बेरो पट ज्यासी।

पैली विष्णुजी पृथ्वी पर आया। अलख निरंजन अलख निरंजन करता गाँव मं पधार्‌या। चेहरै पर तेज ओर बिलक्षण शांति देखकर बरबस ही आदमी कै भक्ति उपजै।

सेठ कै घर कै आगै आया। बोल्या, 'भिक्षा मिलेगी?'

सेठाणी बड़ी धर्मभीरु थी, साधु-संन्यासी की सेवा करती। ऊँ कै घर सै कोई खाली हाथ कोनी जातो। सेठ भी साधूरूपी भगवान नै देखकर आयो ओर उणा नै पूछ्यो कि 'आप कठै सै आया।' भगवान बोल्या कि, 'मैं हिमालय से आयो हूँ। गोमुख सै, गंगासागर कै संगम पर जावूँगा पण रास्तै मं ही चोमासो होगो सो एक जगह ही चार महीना बिताऊँगा। कोई जगह देखर्‌यो हूँ।'

सेठ बोल्यो, 'मैरे घणा ही कूवा, नोरा धरमशाळा पड्या है, थारो मन हो बठै ही रह ज्यावो।'

भगवान बोल्या- 'सेठ, मैं एक जगह बैठ ज्यावूँ तो फेर उठूँ कोनी च्यार महीना उठे ही बैठ्यो रहूँगा। चाये कुछ भी होज्या। तू मन्नै हटा कोनी सकै।'

सेठ बोल्यो, 'हटाऊँगा क्यूँ, घणी ही जघाँ है।'

सेठ सै बात पक्की करकै भगवान बोल्यो, 'सेठ मैं तेरी कुरडी पर बैठूँगा।' सेठ बोल्यो, 'महाराज इतणी जघाँ छोड़कर थानै या कुरड़ी ही क्यूँ पसंद आई। खैर, थारो मन-बैठ ज्यावो।'

भगवान सेठ की कुरड़ी पर बैठ्या लक्ष्मीजी की बाट देखै- कि दिखाँ लक्ष्मी महाराणी अब के करैगी। अच्छ्यो तमाशो होवैगो- मन्नै अठै सै अब सेठ कइयाँ हटा सकैगो।

दिन दो दिन को गोतो देकर लक्ष्मी जी जोगण को भेष धर कै सेठ कै दरवाजै पर पूँच्या। हेलो मार्‌यो 'कोई पाणी प्यावैगो के?' सेठाणी पाणी प्यावै लागी। गिलास दियो।

लक्ष्मीजी बोल्या- मैं ओर कोई कै राछ मं पाणी कोनी पीऊँ। झोळै सै सोनै को गिलास काड्यो, पाणी पीया और गिलास नै उठै ही बगादियो। सेठाणी भौचक्की सी रहगी- बोली माई थारो गिलास?

लक्ष्मीजी बोल्या, मैं एक बार पाणी पील्यूँ जिकै मं ओजूँ कोनी पीवूं।

तिबारी मं सै सेठजी भी तमासो देखै था। सोनै कै गिलास नै देखकर बै भी भाग्या-भाग्या आया- ओर हाथ जोड़कर बोल्या, 'माई, म्हारै, भोजन कर कै जावो।' लक्ष्मीजी बोली, 'सेठ मन्नै तो चोमासो करणो है- मैं ऊरै करल्यूँगी।'' सेठ नै तो खुशी कै मारै चक्कर सो आगो- आपकै भाग्य पर विश्वास ही कोनी होयो। बोल्यो, 'माई, मेरी सारी हेली थारै आगै पड़ी है, थे मेरे रंग महल मं डेरो घालो। म्हारो के है, म्हे तो कठे भी रह ज्यास्यां।' लक्ष्मीजी तो आप अड़ाँकला। सारै घर मं घूम घूम कै कुरडी कन्नै आके बोल्यो, 'मैं तो कुरड़ी पर बैठूँगी।' सेठ घणी आरजू मिन्नत करी, माई थे उरै के बैठोगा- थारै लिये सारो घर त्यार है। पण तिरिया हठ ठहरयो।

सेठ साधू नै बोल्यो, 'बाबाजी जघाँ खाली करो-उरै या माई बैठेगी।'

साधू बोल्यो, 'सेठ, मैं तन्नै पैली ही बोल्यो थो कि मैं एक बार बैठ ज्यावूगा तो उठूंगा कोनी, कुरड़ी सै निकरमी कुणसी जघाँ है। तू तेरा वचन निभा। मैं तो कोनी उठूँ।'

सेठ बोल्यो, 'बाबा उठ खड्यो हो- ऊरै या माई बैठेगी।' भगवान रूपी साधू घणो ही जिद कर्‌यो, उठे पसरगो।

बोल्यो, 'मेरे आशीर्वाद सै तेरा लोक परलोक सुधर ज्यागा। तू सीधो सुरग में जावैगो। मन्नै तू साक्षात् विष्णु भगवान ही समझ।''

सेठ बोल्यो, ''भाया, मन्नै लोक-परलोक को नी सुधारणा- ओर तू चाये विष्णु भगवान ही हो-या माई ऊरै बैठेगी। भगवान घणो जिद कर्‌यो, पण सेठ बोल्यो, 'के तो तू राजी कुसी चालतो बण नहीं तो तन्नै घरड़- घरड़ घींस कै फिंकादयूँगा।'

लक्ष्मीजी भगवान कानी ऑख मारी। बिचारा के करता आपको सो मूं ले कर चल्या गया।

उठीनै भगवान कोई भक्त की कुटिया मं पूँच्या। भक्त साधू-रूपी भगवान कै सत्संग सै इतणो प्रभावित होयो कि उणानै आपकी कुटिया मं चोमासो करणै की जघाँ दे दी। भगवान बोल्या कि 'भई मैं एक बार ऊरै रह ज्यावूँगा तो तू मन्नै कुछ भी होज्या, काड नहीं सकै।' साधू बोल्यो, नहीं थे आराम से रहवो।

उठीनै लक्ष्मीजी आपको झोळो लटकायाँ साधू कै प्रकट होगी। पाणी माँग्यो- बो ही सोनै को गिलास काड्यो ओर पाणी पी कै बगादियो।

साधू बोल्यो, 'माई तेरो गिलास उठा- साधू कै अण सब को के काम?' लक्ष्मीजी देख्यो यो लोभ तो उरै कोनी चालै। बोल्या कि मैं चोमासो करणो चावूँ, तेरी कुटिया में रहवूँगी।'

साधू बोल्यो, 'तू भी बैठ ज्या।'

लक्ष्मीजी बोल्या- 'ऐं मोडै नै ओर कोई जघाँ बठा दे मैं ऊरै बैठूँगी।'

साधू नै आयोङ गुस्सो। बोल्यो, ''ये तिरिया चरित्तर ओर कोई नै दिखाये- कदे सोनो काडै, कदै ऐं बिचारै ज्ञानी सन्यासी नै हटाणै की कहवै- ये सब ऊरै कोनी चालै।'

माई साधू नै घणो ही विश्वास दिलावै कि 'मैं लक्ष्मी हूं, मोडै नै हटा।' साधू बोलयो राजी खुशी चालती बण-नहीं धक्का दयूँगा।

विष्णुजी, लक्ष्मीजी कानी आँख मारी और बोल्या, आज भी मृत्युलोक मैं साचा भगत रहवै है।●

सुपुत्र-कुपुत्र सभी पूर्व कर्मों का फल

✍ शिवचरण मंत्री

जून का महीना। तपती दोपहरी का समय। भगवान भास्कर आग बरसा रहे थे। मैं अपने मकान के बाहर के चौक में नीम की छांव में बैठा दैनिक समाचार पत्रों के पृष्ठ पलट रहा था कि पड़ोसन वृद्ध अनूपी मेरे पास आकर पेड़ की छांव में बैठ गई। उसका बिसुरा व लटका मुंह, सूजी हुई लाल सुर्ख आंखें और विशादयुक्त चेहरा देखकर मेरा स्वर फूटा, ''अनूपी, आज इतनी उदास, मलीन और दुखी...?''

मेरा प्रश्न अभी पूरा भी नहीं हो पाया कि अनूपी की आंखों से सावन-भादो की धारा बहने लगी। अनूपी अपनी साड़ी के पल्लू से अपनी आंखें साफ करने लगी। जिज्ञासावश मैंने ज्यों ही पल्लू से ढके हाथों को देखा तो मैं विषाद में पड़ गया। मैंने देखा कि अनूपी के दोनों हाथों में फफोले हैं। इनकी पीड़ा मुझे असहनीय सी लगी। तो मैंने प्रश्न किया- ''दोनों हाथों में ये फफोले ...?'' मेरे प्रश्न के उत्तर में अनूपी पुन: फूट-फूट कर रोने लगी। आंखों से मानो गंगा-जमुना ही फूट पड़ी। मैंने ढांढस बंधाया तो बोली, ''बाबू! मुन्नू ने मेरे दोनों हाथ गर्म सलाखों से...'' और वह सुबक पड़ी।

''मुन्नू, तुम्हारा बेटा?''

साड़ी के पल्लू से आंखों को साफ करते हुए उसने स्वीकारोक्ति में सिर हिलाया।

''पर उसने ऐसा क्यू किया?''

मेरा यह प्रश्न सुनकर वह मौन हो गई। कुछ समय बीता। मेरी सहानुभूतिपूर्ण बातें सुनकर वह स्वस्थ होकर उसने संक्षेप में कहा, ''बाबू, मेरे स्वर्गीय पति अपने समय के अच्छे व्यापारी थे। उनकी अपनी प्रतिष्ठा के साथ-साथ अच्छी चल-अचल सम्पत्ति थी। पर एकाएक सट्टे में उन्हें भारी हानि हुई और वे सड़क पर आ गये। सारी चल-अचल सम्पत्ति बिक गई। मैंने अपने स्वयं के गहने बेचकर मुन्नू और उसकी दो बहनों को पाला-पोसा। दोनों बेटियों के जब हाथ पीले कर चुकी तब तक मुन्नू किशोर ही था। अब वह युवा हो गया है। मेरे कुछ संबंधियों के बहकाने से उसे संदेह हो गया कि मैंने अपनी चल सम्पत्ति अपनी बेटियों को दे दी है। मैंने मुन्नू को आपबीती साफ-साफ कई बार बताई। पर उसे मेरी बात पर विश्वास ही नहीं होता है। आज रात जब मैं सो रही थी, उसने मेरे हाथ गर्म सलाखों से दाग दिये। मैं रोती ही रह गई। वह चीख-चीखकर सच न बताने की यही सजा है, कहता रहा।

अनूपी की करुण व्यथा सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। सगे पुत्र ने मां की यह दुर्दशा की।

वर्षों पहले मेरे एक वकील मित्र थे। मेरी उनसे प्राय: प्रात:काल मुलाकात हो जाया करती थी। परिचय घनिष्ठ हुआ। मैं उनके घर आने-जाने लगा। धीरे-धीरे मित्रता में प्रगाढ़ता आ गई। मैं जब भी उनके घर जाता तो देखता कि वकील साहब का वकील पुत्र अपने माता-पिता का श्रवण कुमार सा स्नेह करता और उनकी आज्ञा का अक्षरस: पालन करता। घर का वातावरण सुखद था। पर एक दिन मैं अपने एक साथी से यह सुनकर चकित रह गया कि वकील साहब का पुत्र दत्तक पुत्र था।

उपरोक्त वर्णन से मेरा यह कदापि आशय नहीं है कि सभी सगे पुत्र अच्छे नहीं होते हैं और सभी दत्तक संतान श्रवण कुमार ही होते हैं।

दार्शनिक ख़लील जिब्रान का मत है- बालक का इस संसार में जन्म आप द्वारा होता है किन्तु उसका निर्माण आप नहीं करते। अत: व्यक्ति को अपने रक्त से उत्पन्न अपनी संतान को अपने जीवन के विस्तार के रूप में देखना न्यायोचित नहीं। संतान को अपने वंश परंपरा बनाये रखने अथवा चलाये रखने तक मानना उचित होगा। सामाजिक सर्वेक्षणों के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि समाज में प्रतिष्ठित, चर्चित मान-सम्मानधारी सदाचारी महापुरुषों की संतान सामान्यतया माता-पिता के प्रति अशिष्ट अवज्ञाकारी होते हैं। जबकि कुसंस्कारी पुरुषों की संतान अपने माता-पिता के प्रति नम्र आज्ञाकारी व श्रद्धावान होते हैं। धर्मवेत्ताओं की मान्यता है कि संतान सुख कर्माधीन होता है। इस मान्यता अनुसार पूर्व जन्म के शुभ कर्मों को अच्छी व बूरे कर्मों के कारण बुरी संतान प्राप्त होती है। जिब्रान के अनुसार यद्यपि बालक संसार में आप द्वारा ही लाया जाता है। वह आपकी आयु में वृद्धि नहीं कर सकता है। अत: यदि आप अपनी संतान से वास्तव में प्रेम करते हैं तो उससे अपनी महत्वाकांक्षाओं, अतिरिक्त इच्छाओं की पूर्ति की अपेक्षा न करें। संतान अपने रक्त से उत्पन्न हो या दत्तक। उसमें वास्तविक रूप से भावनात्मक सम्बन्ध का ही विकास होता है। यही सम्बन्ध जीवन में स्थायी और महत्वपूर्ण होता है। प्रेम विवाह में पुरुष व नारी परस्पर एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं और कालांतर में यही आकर्षण प्रेम में परिणत होकर विवाह बंधन में बदल जाता है। दूसरी ओर परम्परागत विवाह में पुरुष व नारी विवाह पूर्व परस्पर एक-दूसरे की ओर आकर्षित न होकर पारस्परिक सहजीवन के कारण ममताशील बनकर एक-दूसरे की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। परिणामत: भावनात्मक सम्बन्ध का उदय होता है। इससे स्पष्ट है कि संतान में माता-पिता के आदरभाव सम्बन्ध का मूलकारक भावना का उद्भव है। पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण आज आर्थिक रूप से स्वतंत्र वृद्ध माता-पिता को उनकी संतान जहां स्वतंत्र रूप से जीवन जीना नहीं देना चाहते वहीं कतिपय माता-पिता भी अपनी संतान को स्वतंत्र जीवन जीने से रोकते हैं। वृद्ध माता-पिता को अपनी संतान को दिया पैसा मांगने पर कई बार अपमानजनक शब्द यथा वृद्धावस्था में भगवान का नाम लो, खाने-पीने पर काबू रखो आदि कटू शब्द सुनने पड़ते हैं। आज बालक अपने दादा-दादी के साथ रहकर परीकथायें नहीं सुनना चाहते। तीन पीढ़ियां एक साथ परस्पर प्रेम, सद्भाव के साथ रहने वाले परिवारों की संख्या नगन्य होती जा रही है।

संतान स्वयं की हो या दत्तक, माता-पिता उसे योग्य बनाने का प्रयास करते हैं। संक्षेप में संतान को लॉटरी का टिकट न मानकर उसमें माता-पिता प्रेम-स्नेह की भावना से ही आदर-सम्मान की आशा करे तो उचित होगा।●

अतिरेक मानव

✍ डॉ. मंगलाप्रसाद

सामान्य मनुष्य भी यदि स्वयं को विशेष महत्व का मानता है तो यह उसका अतिरेक अथवा अहंकार ही कहा जाता है। मनुष्यता के लक्षण उसके विनम्र, सहज और सरल होने में हैं, वह जब इस परिधि को लांघ जाता है तो हम उसे मनुष्य कहने में संकोच करते हैं। कारण, उसमें इस प्रकार के अभिमान का सृजन होना उसके विनाश का लक्षण है।

राजनीतिज्ञ हो अथवा धनपति, विद्वान हो या कुशल वैज्ञानिक सभी स्थिति में अन्ततः मानव तो मानव ही है, इसे सदैव हमें मानकर चलना चाहिए। मनुष्यता यदि पशुता में बदल जाय, वह देवता से दानव बन जाय तब उसकी भयंकरता का अंदाज लगाना कठिन हो जाता है। सत्ता प्राप्त हो जाने पर, दरिद्रता से छुटकारा पा जाने पर, दुःख से सुख में बदल जाने पर वह सभी बातें विस्मृत हो जाती हैं, जिस संघर्ष में रहकर वह व्यक्ति सफल होता है। आलस्य और प्रमाद मनुष्य के पतन के दो प्रमुख कारण हैं। मनुष्य जब प्रगति की ओर अग्रसर होता है तब उसके अपने अतीत पर भी ध्यान रखना चाहिए, जिस परिस्थितियों में रहकर वह बढ़ा है, उससे दूसरे लोग भी ग्रसित व परेशान होंगे।

प्रवचन और पराक्रम दो अलग-अलग बिन्दु हैं। प्रवचन आत्मिक शान्ति दे सकता है, किन्तु पराक्रम किए बगैर दिनचर्या चलाना मुश्किल हो जाता है, इसी प्रकार श्रम और पूंजी भी सफलता के दो मूल श्रोत हैं। देखें जब हम जमीन में एक बीज बोते हैं, तब वह दो स्वरूपों में प्रस्फुटित होता है, एक अंश उसका जमीन के अन्दर की ओर जाता है, तो दूसरा अंश मिट्टी के बाहर पौधा के रूप में दिखाई पड़ता है, दोनों ही क्रमशः बढ़ते हैं और बाद में वृक्ष बन जाते हैं। मिट्टी में जाने वाली जड़ उसे उर्जा देती है और उसका बिहारी अंश उसे वायु और प्रकाश देता है, तभी हम उस वृक्ष से लाभान्वित होते हैं। अतएव जब मनुष्य में उपेक्षा का भाव दूसरों के लिए संवेदनशील न बनकर घृणा का स्वरूप धारण कर लेते हैं तब वह मनुष्य, मनुष्य नहीं रहता। पूर्वजों ने हमें विनय, विनम्रता और 'विद्याददाति विनयम्' का पाठ पढ़ाया है। इसमें करुणा, दया, सर्वधर्म समभाव, सभी में प्रभू का दर्शन मानवता का प्रथम सोपान है। मनुष्य कितना भी महान क्यों न हो, उसका स्थान अन्ततः धरती पर ही है। जिस प्रकार वायुयान कितनी ही ऊंचाई पर क्यों न उड़े, उसे धरती से ही उड़ना और उसी पर उतरना है, वह सदैव आकाश में नहीं रह सकता। इस सच्चाई को जान लेना चाहिए।

सम्प्रति मनुष्य का अहंकार इस कदर बढ़ गया है कि वह स्वयं की पहचान भी नहीं कर पा रहा है। अपने परिवार, समाज और मित्रों में वह अधिक योग्य और अधिक संवेदनशील-दानी तथा बुद्धिजीवी कहने में अपना गौरव मानते हैं। यदि ईश्वर की कृपा उस पर हो गई तो वह रामायण की उस चौपाई को चरितार्थ करता है, जिसमें गो. तुलसीदास ने लिखा है-

क्षुद्र नदी भरि जल उतराई, जिमि थोरे धन खल बौराई

मनुष्य को सदैव ध्यान रखना चाहिए वह मनुष्य है, मानवता खोकर वह कभी मनुष्य नहीं रह सकता। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपनी सभी प्रार्थना सभाओं में अभिमान, अनाचार, अन्याय तथा अतिरेक का विरोध किया था और विनम्रतापूर्वक उन्होंने लोगों को समझाया था कि यह सभी दुर्गुण मनुष्य के पतन के कारण हैं, इस पर स्वयं का नियंत्रण पाना सबके लिए आवश्यक है।●

नजर

नजर-नजर से मिली तो चौनजर हो गई
नजर ऊपर उठी तो तकरार हो गई।
नजर नीचे झुकी तो शरमा के रह गई।।
नजर-नजर से बात हुई तो मोहब्बत हो गई
नजर फेर ली तो फिर दुश्मनी हो गई।।
नजर लगी बीमारी आई
नजर उतारी तो बचने की आस हो गई
नजर उठाई नजराना मिला
नजर झुकाई फूलों की बरसात हो गई।
नजर बचाई तो चोरों की पदवी मिली
नजर हटाई तो बैरी बन कर रह गई
नजर ने देखा नजारा तो मन हंस दिया
और नजर चली गई तो मानो दुनियां चली गई।।
सागर के नजारे को देख नजर हठला के रह गई
तपती दोपहरिया में नजर चुप हो के सो गई।
आंखों की नजर वालों दिल खोल कर देखो
बिन शब्दों के ही नजर सारी बात कह गई।।

– आशारानी लाखोटिया

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

युग पथ चरण

नगांव : नई कार्यकारिणी के चुनाव हेतु एक सभा आयोजित

दिनांक ११.४.२००४ को नगांव शाखा की नई कार्यकारिणी चुनाव हेतु श्री मारवाड़ी पंचायत भवन में श्री संतलालजी बंका की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के निवर्तमान उपाध्यक्ष श्री प्रह्लादराय तोदी एवं पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के निर्वतमान महामंत्री श्री विजय कुमार मंगलुनिया, कोषाध्यक्ष श्री बजरंगलाल नाहटा एवं समाज के कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मंत्री श्री पवन कुमार गाड़ोदिया ने पिछले कार्यकाल की गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया एवं कोषाध्यक्ष द्वारा दिया गया आय-व्यय का लेखा-जोखा भी सभा के समक्ष प्रस्तुत किया, जो सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया। आगामी कार्यकाल के लिए **श्री बजरंगलाल नाहटा** को **अध्यक्ष** पद के लिए सर्वसम्मति से निर्वाचित किया गया। नई कार्यकारिणी के नामों की घोषणा श्री ज्योति प्रसाद खदड़ीया द्वारा की गई। उपाध्यक्ष पद के लिए श्री बजरंगलाल अग्रवाल, श्री विजय कुमार मंगलुनीया, श्री माणकचंद नाहटा, सचिव पद के लिए श्री अनिल कुमार शर्मा, उपसचिव पद के लिए श्री श्रीचंद कुण्डलिया एवं कोषाध्यक्ष पद के लिए श्री रघुवीर प्रसाद आलमपुरिया को नियुक्त किया गया। तत्पश्चात् नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने सभा को सम्बोधित करते हुए नई कार्यकारिणी एवं समाज के प्रत्येक व्यक्ति से पूरा सहयोग देने के लिए अनुरोध किया। श्री बजरंगलाल अग्रवाल ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष को बधाई दी। श्रीचन्द कुण्डलिया ने अपने वक्तव्य में नवनिर्वाचित अध्यक्ष को पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

लखिमपुर शाखा : भगवान परशुराम जयंती आयोजित

लखिमपुर शाखा के तत्वावधान में दिनांक २२.४.२००४ को भगवान श्री परशुराम जयंती बड़े ही धूमधाम से मनाई गयी। उक्त धार्मिक कार्यक्रम में मारवाड़ी समाज के काफी भाई बंधु, माताएं व बच्चे उपस्थित थे। कार्यक्रम प्रारंभ करने से पहले सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नारायण पारीक मुख्यअतिथि पण्डित श्री रामनिवास का फुलाम गमछा पहनाकर स्वागत किया। एक धार्मिक ग्रंथ भी भेंट की। छोटे बच्चों ने धार्मिक श्लोक, दोहा व भजन गा कर सुनाये। उक्त आयोजन का विशेष कार्यक्रम धार्मिक प्रश्नोत्तरी था, जिसे बड़े ही रोमांचक रूप से संचालन किया श्री नरेश दिनोदिया तथा श्री गोपाल चौधरी ने।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

प्रान्तीय अध्यक्ष का सांगठनिक दौरा

रोसड़ा शाखा :

बैठक की अध्यक्षता डा. नवीन कुमार अग्रवाल ने की। श्री किशोरी लाल अग्रवाल ने सभा में उपस्थित बन्धुओं को मारवाड़ी सम्मेलन की सदस्यता ग्रहण करने की अपील की तथा संगठन को मजबूत बनाने का आह्वान किया। श्री सीताराम बाजोरिया एवं श्री रामजी भरतिया ने शाखा से संबंधित उद्देश्यों को बताया।

प्रान्तीय अध्यक्ष डा. रमेश कुमार केजड़ीवाल ने सभा को सम्बोधित किया और कहा कि 'एकला चलो रे' की नीति से ही हमारे समाज का सर्वांगीण विकास होगा। महीने में कम से कम एक बार सभा का आयोजन हो ताकि संगठन मजबूत बने।

रोसड़ा शाखा में निर्वाचित होने वाले सदस्यों की सूची :-

अध्यक्ष- श्री नवीन कुमार अग्रवाल, उपाध्यक्ष- श्री अरुण कुमार खेमका, श्री मामराज अग्रवाल, मंत्री-नीतेश कुमार सर्राफ, संयुक्त मंत्री- श्री रमेश कुमार खेमका, श्री पंकज अग्रवाल, कोषाध्यक्ष- आनन्द बजाज, समिति सदस्य- श्री अरुप कुमार खेमका।

दलसिंह सराय शाखा

दलसिंह सराय शाखा में मारवाड़ी समाज के लगभग ४० परिवार हैं। दिनांक १.५.२००४ को हुई सभा की अध्यक्षता भगवती प्रसाद अग्रवाल ने की।

प्रान्तीय अध्यक्ष डा. रमेश कुमार केजड़ीवाल ने कहा 'मुझे काफी खुशी है कि यहां के लोग समाज के बारे में कुछ सोचते हैं तथा प्रयासरत हैं तथा यहां के कुछ लोग राजनीतिक स्तर पर भी पहचान बनाए हुए हैं। हमारे समाज के काफी लोग सरकारी पदों पर भी ऊँचे ओहदे पर आसीन हैं। मुझे इसका गर्व है। यह जो सफलता मिली है वह कोई एक वर्षीय प्रयास नहीं है, बल्कि यह पचास साल पुराना प्रयास है जिससे हमें सैनिक स्तर पर सफलता मिली है। राजनीति में आगे आने के लिए यह जरूरी नहीं है कि कोई विशेष पार्टी में आप जुड़े। वह कोई भी पार्टी हो जो आप को अच्छी लगे, आप उसमें शामिल हों। हमारी शिक्षा समिति के अंतर्गत रु. १०००/- तक गरीबों के प्रति सहायतार्थ दी जाती है और आप सब भी उनलोगों का चुनाव कर संगठन से सहायता लें। आप अपने भी अधिवेशन करें, मैं आप लोगों का सहयोग करूंगा। सभा ने श्री सुशील सुरेका को अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया।

इनके अतिरिक्त सभा को सम्बोधित करनेवालों में सर्वश्री किशोरीलाल अग्रवाल, प्रान्तीय उपाध्यक्ष रामजी भरतिया, शंकरालाल बंका आदि थे।

समस्तीपुर शाखा

समस्तीपुर में मारवाड़ी समाज के २२५ घर है।

दिनांक २ मई २००४ के सभा की अध्यक्षता श्री वैद्यनाथ शर्मा ने की।

प्रान्तीय अध्यक्ष डा. रमेश कुमार केजड़ीवाल ने कहा 'आप सबों में वे सारी विद्याएं मौजूद हैं जो आज अपने समाज को जरूरत है। अपना समाज जब एक जगह से दूसरी जगह जाकर व्यापार कर सकता है तो संगठन को क्यों नहीं चला सकता। संगठन हर समय आपके साथ है। जरूरत है आपके पहल की, कोशिश की। सम्मेलन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं। राजस्थानी भाषा का विकास, युवा एवं महिला के विचारों का विकास करना, बिना जातिगत भावना के निर्धनों की सहायता, सेवा करना। हमें शिक्षा के उच्चतम स्तर से जुड़ना है, केवल व्यवसाय से ही नहीं चलेगा। उसके लिए सभी मिलकर सामाजिक क्रान्ति लायें। आप शिक्षा समिति की मदद से निर्धन छात्रों की सूची बनाकर देवें। जिससे संगठन उन्हें आर्थिक सहयोग करे। यह जरूरी नहीं कि आप सर्वप्रथम विधायक ही बन जाएं। जरूरत है राजनीति के सहारे समाज की मदद करने की। सामूहिक विवाह के बारे में उनका कहना था कि हमारे समाज का दायित्व हो जाता है कि वह समाज की बेटी का ब्याह करे तथा सामूहिक सहयोग करे। हम दिशा निर्देश देने आये हैं कि आप अपने समाज का गठन करके विकास को गति दें। समाज को क्या कार्य करने हैं इसकी एक सूची उन्होंने समाज को दी तथा सदस्यता ग्रहण करने के लिए सभी का आह्वान किया।

सभा को सम्बोधित करने वाले अन्य पदाधिकारियों में थे सर्वश्री रामजीलाल भरतिया, किशोरीलाल अग्रवाल, रामजी गोयनका, दीनदयाल काबरा, मोहनलाल अग्रवाल आदि।

हसनपुर शाखा

मारवाड़ी समाज के यहां पर लगभग १२५ घर हैं। सभा की अध्यक्षता श्री वैजनाथ शर्मा ने की।

प्रान्तीय अध्यक्ष डा. रमेश कुमार केजड़ीवाल ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा- समाज जो बना है वह एक परिवार को मिलाकर। यह हमारा दायित्व है कि परिवार में सर्वप्रथम हम परिवार का भरण पोषण अच्छे ढंग से करें। धीरे-धीरे हमारा दायित्व बढ़ता जाता है पूरे समाज, पूरे राष्ट्र के उत्थान की। जब हम सामाजिक परिवेश पर सोचते हैं तो लगता है कि यह पूरा समाज एक बगीचा है। हमारा दायित्व है कि बगीचे रूपी समाज में कोई मुर्झाए नहीं। सब का एक समान विकास हो। मुझे जानकर काफी प्रसन्नता हुई कि हसनपुर समाज के सभी लोगों के पास अपना मकान है। यह हमारा दायित्व है कि एक योजना बनाकर मकान बनाएं तथा जिन्हें भी मकान की सुविधा नहीं है उसे यह सुविधा प्राप्त हो। हमने अन्नपूर्णा योजना के अन्तर्गत सभी गरीबों को १० किलो अनाज देने की व्यवस्था की है। शैक्षणिक स्तर पर भी गरीब छात्रों को सहयोग करने की व्यवस्था है। मारवाड़ी समाज ही पूरे देश में ऐसा वर्ग है जो सामाजिक स्तर पर धर्मशाला, अस्पताल, स्कूल इत्यादि खोले हैं। अब हम लोगों को जरूरत है राजनीति में आने की। अ.भा.मा. सम्मेलन के बम्बई अधिवेशन में प्रस्ताव पास हुआ है कि अब हमें राजनीति में अधिक सक्रिय होना है। समाज में हम सभी एक हैं लेकिन राजनीति में हम अलग-अलग हैं। राजनीति में प्रवेश के लिए आप सभी को समझना होगा तथा शुरूआत करनी होगी। हमारा सब से बड़ा काम है- जन साधारण का कल्याण करना।

कार्यक्रम को सम्बोधित करनेवालों में थे सर्वश्री गोविन्द प्रसाद गोयल, दीपचंद बरबरिया, नीरज बरबरिया, युवा मंच के श्री राजीव ड्रोलिया, तिरहुत प्रमण्डल के अध्यक्ष सीताराम बाजोरिया, रामजी भरतिया, किशोरीलाल अग्रवाल आदि।

सभा ने श्री अनिल कुमार ड्रोलिया को अध्यक्ष मनोनीत किया। सर्वश्री कमल कुमार गोयल एवं बजरंग प्रसाद उपाध्यक्ष मनोनीत किये गये।

बिथान शाखा

दिनांक १ मई २००४। सभा की अध्यक्षता श्री विश्वनाथ जयपुरिया ने की। प्रान्तीय अध्यक्ष डा. रमेश कुमार केजड़ीवाल ने अपने सम्बोधन में कहा कि सम्मेलन शिक्षा समिति के अन्तर्गत गरीब तथा निर्धन छात्रों को १०००/- रु. सहयोग के रूप में देती है कई ऐसे उदाहरण है जो सम्मेलन के सहयोग से शिक्षा प्राप्त करके उच्च पदों पर आसीन है। मारवाड़ी युवा मंच हमारा ही अंग है वह हमारे सम्मेलन से अलग नही है। आप सम्मेलन के लिए इतना कार्य करें कि आपको गर्व हो कि हमने समाज के लिए कुछ किया है। महीने में कम से कम एक बार बैठक जरूर हो। बिहार में सेवा कार्य को बढ़ावें जिससे सामाजिक स्तर पर हमारे समाज की प्रशंसा हो। सामाजिक स्तर पर सहयोग करते हुए राजनीति में प्रवेश करें। आप अपने संगठन को स्वयं मबूत बनाने की इच्छा बनाएं।

सभा के अन्य सम्बोधन कर्त्ता थे- सर्वश्री किशोरीलाल अग्रवाल, रामजीलाल भरतिया, बृजमोहन शर्मा, सीताराम बारोरिया, उमाशंकर जयपुरिया आदि।

सभा ने श्री विश्वनाथ जयपुरिया को अध्यक्ष मनोनीत किया।

उत्तर प्रदेश प्रादेशिक सम्मेलन

कानपुर : शाखा अध्यक्ष लायन्स के उपमण्डलाध्यक्ष निर्वाचित

२४ अप्रैल २००४ को आगरा में आयोजित मण्डलीय अधिवेशन में अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन कानपुर के अध्यक्ष श्री गोपाल तुलस्यान लायन्स क्लब्स इन्टरनेशनल ३२१बी, २ के उपमण्डलाध्यक्ष भारी बहुमत से निर्वाचित हुए।

श्री तुलस्यान कानपुर शाखा के संस्थापक सचिव एवं प्रादेशिक शाखा में उपमंत्री के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कर चुके हैं।

सम्मेलन की एक कार्यकारिणी सभा में श्री तुलस्यान को उनके चयन के लिए बधाई दी गयी। सदस्यों ने कहा कि उनके इस चयन से सम्मेलन का मान बढ़ा है।

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

बलांगीर : छठवां कार्यकारिणी की बैठक

बलांगीर जिला सम्मेलन की छठवां कार्यकारिणी बैठक जिला सभापति श्री बशिष्ठनारायण जैन की अध्यक्षता में सोनपुर शाखा द्वारा आयोजित किया गया। उसमें बलांगीर, सोनपुर, सैतला, पटनागड़ शाखा के सदस्यों की उपस्थिति रही। बैठक में सैतला शाखा द्वारा पारित प्रस्तावों का अनुमोदन किया गया। जिला सचिव श्री गौरीशंकर अग्रवाल ने संगठन को मजबूत करने का आह्वान किया। सोनपुर शाखा के अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल, बरिष्ठ सदस्य श्री नरसिंह प्रसाद भूत, श्री नन्द किशोर अग्रवाल, सैंतला शाखा अध्यक्ष श्री अर्जुन प्रसाद अग्रवाल, पटनागढ़ शाखाध्यक्ष श्री पृथ्वीराज

जैन द्वारा बैठक में उपस्थित सदस्यों को अनेक सुझाव दिये गये।

बलांगीर शाखा द्वारा पल्स पोलियो अभियान भी विगत दो वर्षों, से सुचारू रूप से जिला प्रशासन का सहयोग लेते हुए चलाया जा रहा है।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

मोतीपुर : चौ. संजय अग्रवाल इलेक्शन वाच के सह-संयोजक नियुक्त

बिहार प्रान्तीय मारवाड़ी युवा मंच के प्रान्तीय सहायक मंत्री चौ. संजय अग्रवाल को बिहार इलेक्शन वाच (वेव) के तत्वावधान में वैशाली संसदीय निर्वाचन क्षेत्र ९- इलेक्शन वाच का सह-संयोजक बनाये जाने पर मारवाड़ी युवा मंच मोतीपुर शाखा ने बधाई दी है।

हसनपुर रोड शाखा : वार्षिक चुनाव सम्पन्न

हसनपुर रोड शाखा का वार्षिक चुनाव दिनांक २२ मार्च २००४ को सम्पन्न हुआ। चुनाव अधिकारी श्री अशोक जाजोदिया की उपस्थिति में श्री राजीव कुमार ड्रोलिया सर्वसम्मति से सत्र २००४-०५ के लिए पुन: अध्यक्ष निर्वाचित हुए। श्री ड्रोलिया ने अपनी नई कार्यकारिणी का गठन किया, जिसमें सर्वश्री महेश चांद एवं दीपचंद बड़बड़िया उपाध्यक्ष, नीरज कुमार बड़बड़िया सचिव, मनोज कुमार स्वाईका कोषाध्यक्ष तथा देवीप्रसाद अग्रवाल, शंभु बड़बड़िया, दिलीप ड्रोलिया, सुभाष कुमार बड़बड़िया, संदीप जाजोदिया, संजय बड़बड़िया, अमिसाष कानोड़िया, आलोक बड़बड़िया, मनीष कुमार अग्रवाल, गौरीशंकर कानोड़िया, मनीष कुमार गोयल एवं श्रीमती सुधा जाजोदिया कार्यकारिणी सदस्य बनाए गए।

मोतीपुर : शान्ति मिशन पर निकले श्रीलंकाई दल का स्वागत

मारवाड़ी युवा मंच के शाखाध्यक्ष चौधरी संजय कुमार द्वारा शान्ति मिशन पर भ्रमण कर रहे ११ सदस्यीय श्रलंकाई दल के मोतीपुर नगर में प्रवेश करने पर १३ फरवरी को उनका हार्दिक अभिनंदन किया गया। दल ने मिशन को 'ग्लोबल शांति मिशन' नाम दिया। इस मिशन में यूरोप एवं एशिया के करीब तीस देशों की यात्रा का कार्यक्रम है।

जहीराबाद : सांगठनिक बैठक सम्पन्न

मारवाड़ी युवा मंच जहीराबाद की सांगठनिक बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष बलराम सुलतानिया, प्रादेशिक अध्यक्ष रमेशकुमार बंग, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य राजगोपाल सारड़ा सहित बड़ी संख्या में स्थानीय राजस्थानी समाज के युवा, बुजुर्ग एवं महिलाएं उपस्थित थे। शाखाध्यक्ष कमलकिशोर पलोड़ ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत कर उन्हें स्मृति चिह्न भेंट किया। मंत्री श्यामसुन्दर झंवर ने मंच द्वारा सत्र २००३-०४ में संचालित एवं सम्पादित किए गए जनकल्याणकारी कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी दी। इस अवसर पर समाज को उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करने वाले कार्यकर्त्ताओं का सार्वजनिक अभिनंदन किया गया। मंच के प्रांतीय अध्यक्ष रमेशकुमार बंग ने कहा कि शाखा ने अपनी सेवाओं द्वारा स्थानीय समाज में राजस्थानी समाज के प्रति एक विशेष स्थान बनाया है। इतर शाखाओं को भी इसी प्रकार स्थानीय समाज के निकट जाने का प्रयास करना चाहिए। मारवाड़ी युवा मंच देश भर में राष्ट्रीय एकता का संवाहक बनकर कार्य कर रहा है। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुलतानिया ने मंच द्वारा संचालित राष्ट्रीय कार्यक्रमों की विस्तृतत जानकारी दी। राजगोपाल सारडा ने भी सभा को सम्बोधित किया। बैठक के पश्चात् राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारियों ने स्थानीय बस स्टैण्ड पर जलशाला का उद्घाटन किया और यात्रियों को मिष्टान्न वितरित किए।

अन्य संस्थाएं

हैदराबाद : गीता प्रेस गोरखपुर के नये भवन व औषधि केन्द्र का उद्घाटन

२५ अप्रैल। गीता प्रेस, गोरखपुर, की दुकान ने नव निर्मित भवन, अतिथि कक्ष एवं आयुर्वेद औषधि विक्रय केन्द्र का उद्घाटन आज सारड़ा बन्धु (निजामाबाद) द्वारा प्रस्तुत संगीतमय सुन्दरकांड पाठ के मध्य भव्य रूप से सम्पन्न हुआ।

नवनिर्मित भवन का उद्घाटन ए.पी. पेपर मिल्स के कार्यकारी निदेशक श्री आर.सी. मल्ल ने, अतिथि कक्ष का उद्घाटन श्री राजकुमार मालपाणी एवं आयुर्वेद औषधि विक्रय केन्द्र का उद्घाटन श्री बजरंगलाल मालू ने किया। इस अवसर पर गीता प्रेस के सचिव न्यासी चांदगोटिया ने अपने संदेश में मंगल बधाई प्रेषित की।

कार्यक्रम का संचालन एवं गीता प्रेस गोरखपुर का संक्षिप्त परिचय रामदेव भूतड़ा ने दिया। आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री रमेश कुमार बंग ने अपने धन्यवाद ज्ञापन में कहा कि तेजी से संक्रमित होती भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए धर्म ग्रंथों के अध्ययन, अध्यापन से श्रेष्ठ अन्य कोई मार्ग नहीं है। अपनी भावी पीढ़ी को भारतीय संस्कृति से अवगत कराना अत्यन्त आवश्यक है और गीता प्रेस गोरखपुर इसके लिए विविधता पूर्ण धार्मिक साहित्य यथा संभव न्यूनतम मूल्य पर उपलब्ध करा रहा है।

बेलमपल्ली : प्याऊ व्यवस्था

माहेश्वरी समाज ट्रस्ट द्वारा बेलमपल्ली (आंध्र प्रदेश) जिला आदीलाबाद ने ग्रीष्मकाल में जनता के लिए रेलवे स्टेशन पर ५ पानी की प्याऊ, बाजार व बस स्टैंड पर ४ प्याऊ, १५ मार्च से १५ जून तक ठंडा पानी पिलाने के लिए व्यवस्था की है। इनके कुछ आदमी प्लेटफार्म पर घूम-घूम कर मुसाफिरों को ठंडा पानी सप्लाई करते हैं।

चिड़ावा दहेज प्रथा के विरोध में शपथ ग्रहणकर्ताओं का अभिनंदन

श्री डालमिया शिक्षण संस्थान द्वारा अभिनंदन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दहेज प्रथा के विरोध में शपथ ग्रहणकर्त्ताओं को प्रोत्साहित करने के लिए अयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध उद्योगपति, समाजसेवी श्रीयुत् विष्णु हरि डालमिया ने की। श्री डालमिया ने कहा कि आज समाज में अनेक प्रकार के विष फैल रहे हैं किन्तु इनमें दहेज प्रथा का विष समाज के लिए सबसे घातक है। यह कालकूट विष महिलाओं के विकास में बाधक है। इस दहेज रूपी घातक सामाजिक कुरीति को दूर करने के लिए युवा वर्ग को आगे आना होगा। डालमिया जी ने दहेज विरोधी शपथ ग्रहणकर्त्ता छात्र-छात्राओं से कहा कि वे इस शपथ को अपनी संतान के विवाह के अवसर पर भी निभायें। मुख्य अतिथि श्रीमती सुमित्रा सिंह ने इस कुरीति के उन्मूलन के लिए आयोजित कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए दहेज प्रथा के विरोध में शपथ ग्रहण करने वाले २५ छात्रों एवं ३२ छात्राओं को डालमिया परिवार द्वारा भेंट की गई एक-एक स्वर्ण मुद्रा अपने करकमलों से प्रदान कर सम्मानित किया तथा छात्र-छात्राओं के अभिभावकों का अभिनंदन किया। समारोह को सम्बोधित करने वाले अन्य अतिथियों में थे सर्वश्री कुंजीलाल मीणा जिला कलेक्टर, झुंझुनू, हजारीलाल शर्मा, गोगराज अड़किया, बनवारीलाल डालमिया आदि।

लहान : मारवाड़ी सेवा सदन का शिलान्यास सम्पन्न

लहान के समस्त उत्साही, समाजसेवी मारवाड़ी समुदाय की सक्रियता, समर्पण और निष्ठा तथा समाजपरक सेवामूलक चिंतन के परिणाम स्वरूप हिन्दू धर्मावलम्बी, धर्म संस्कृति के संरक्षक महामना कांची काम कोटि के श्री १००८ जगतगुरू शंकराचार्य श्री जयन्त सरस्वती के कर कमलों से मारवाड़ी सेवा सदन का शिलान्यास कार्य सुसम्पन्न हुआ लगभग दो करोड़ की लागत से निर्मित मारवाड़ी सेवा सदन के समउद्घाटन के सुखद, परिमलित मांगलिक शुभ अवसर पर मारवाड़ी सेवा समिति के तत्वावधान में एक चिरस्थायी ऐतिहासिक, धार्मिक, सामाजिक पृष्ठभूमि में आधारित 'स्मारिका' प्रकाशित होने जा रही है। उक्त स्मारिका के लिए शुभकामना तथा अन्य रचना आमंत्रित है।

भुवनेश्वर : सुप्रीम कोर्ट के पूर्व चीफ जस्टीस के परिवार की सफलता में मारवाड़ी समाज का योगदान

भारत के उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश राज्यसभा सांसद जस्टिस रंगनाथ मिश्र ने २१ मार्च २००४ को कटक के एक विशेष समारोह में पिछले सौ वर्षों में उत्कल प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के विकास के लिए योगदान करने वाले

९ विशिष्ट लोगों को सम्मानित किया। इस अवसर पर उन्होंने बताया कि उनके पिता जाने-माने लेखकर गोदावरीश मिश्र अत्यन्त ही गरीब थे। जब वे कोलकाता में पढ़ते थे तब कुछ मारवाड़ी समाज सेवी उन्हें प्रतिमाह दस रुपये देकर पढ़ाई में सहायता करते थे। पांच रुपये में वे पढ़ाई व घर खर्च चलाते थे तथा बाकी पांच रुपये से वे अन्य लोगों की सहायता करते थे। मेरी सफलता के पीछे मारवाड़ी समाज का ही हाथ है। मुख्य वक्ता कमांडर कुलदीप चतुर्वेदी ने बताया कि राज्य का पहले उद्योग से लेकर मंदिर धर्मशाला विद्यालय इत्यादि के निर्माण में मारवाड़ी समाज का उल्लेखनीय योगदान रहा। कर्नल प्रभात कुमार पंडा ने भारत की संस्कृति की रक्षा व राष्ट्रभाषा को सम्मान देने में मारवाड़ी समाज की भूमिका की सराहना की।

इस अवसर पर जस्टिस रंगनाथ मिश्र ने विशिष्ट उद्योगपति सर्वश्री काशी प्रसाद झुनझुनवाला, ओम प्रकाश लाठ, लूनकरण अग्रवाल (सीनापाली) पत्रकार रामकुमार अग्रवाल (बलांगीर), प्रकाश सिताला ओम प्रकाश अग्रवाल, हरिकिशन अग्रवाल, माणिकचंद अग्रवाल (जूनागढ़), डा. ए. सुरेश (रायपुर) को भी सम्मानित किया।

रिपोर्टर द्वारा प्रकाशित एक स्वतंत्र विशेषांक का उन्मोचन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। श्री अशोक पांडे ने मंच का संचालन किया। श्री पवन भूत ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

सम्मान / बधाई

कुमारी अंकिता संचेती 'ओलम्पिक गेम्स' की मशाल वाहनकर्ताओं में

एथेन्स (ग्रीस) में निकट भविष्य में २८वें ओलम्पिक 'गेम्स' जिसमें दुनिया के सभी देश भाग लेंगे, आयोजित होने वाले हैं उसके पहले नियमानुसार 'ओलम्पिक टार्च' दुनिया के २८ देशों में पैदल, साइकिल आदि के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाएगी। जब एथेन्स पहुंच जाएगी तब खेलकूद प्रतियोगिताएं प्रारंभ होगी। इस 'टार्च' को भारत में ४२ व्यक्ति ७ परिवेक्षकों के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाएंगे। कलकत्ता में इस मशाल (टार्च) के दो वाहनकर्ता हैं जिनमें एक कुमारी अंकिता संचेती है। यह सम्मेलन के पूर्व कोषाध्यक्ष, आज विशिष्ट सलाहकार श्री इन्द्रचन्द्र संचेती की पौत्री है। अंकिता गत फरवरी में भारत के राष्ट्रपति डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से मिली थी। इस वर्ष यह माडर्न हाई स्कूल से १२वीं कक्षा की परीक्षा में सर्वप्रथम स्थान पाई थी एवं स्कूल में खेलकूद में दौड़, लम्बी कूद आदि कई प्रतियोगिता में प्रथम आई थी। ओलम्पिक गेम्स के टार्च (मशाल) के वाहकों का चुनाव न्यायाधीशों ने काफी कड़ाई के साथ विभिन्न परीक्षाएं लेकर चुना है।

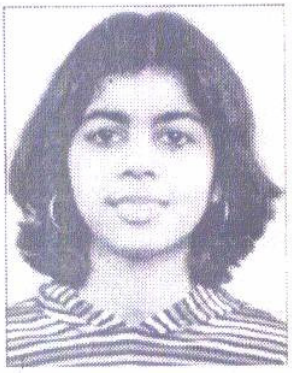

ओलम्पिक खेल प्रारम्भ के समय अंकिता एथेन्स पहुंचेगी और ओलम्पिक स्टेडियम में ता. १३ अगस्त को ओलम्पिक की काफी बड़ी मशाल होती है उसके दर्शक के रूप में वहां रहेंगी।

इस सफलता पर हमारी हार्दिक बधाई।

अहमदनगर : श्री दिलीप गांधी के सुपुत्र देवेन्द्र के शुभ विवाह पर बधाई

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के मुख्य सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व पोत परिवहन राज्य मंत्री श्री दिलीप गांधी के सुपुत्र चि. देवेन्द्र व सौ. प्रगति सुपुत्री श्रीमान् अशोकलाल पन्नालाल बोरा, पूना का शुभ विवाह ३१ मई २००४ को अहमदनगर (महाराष्ट्र) में सम्पन्न होना निश्चित हुआ। हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इस शुभ अवसर पर सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, महामंत्री श्री भानीराम सुरेका, संयुक्त महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने वर-वधू के दीर्घ सुखमय वैवाहिक जीवन प्राप्ति हेतु अपना स्नेहिल आशीर्वाद व शुभकामनाएं प्रेषित की।

कोलकाता : मारवाड़ी सम्मेलन से श्री शीशराम ओला (श्रम एवं नियोजन कैबिनेट मंत्री) को बधाई

राजस्थान के शेखावटी अंचल में किसान और जाट नेता के रूप में लोकप्रिय शीशराम ओला को झुंझुनु लोकसभा क्षेत्र

सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका डा. मनमोहन सिंह एवं श्री शीशराम ओला के साथ।

से कांग्रेस पार्टी की ओर से लगातार चार बार चुनाव जीतने का गौरव हासिल है। तेज तर्रार नेता के रूप में प्रसिद्ध ओला का जन्म झुझनु जिले के अरडावता गांव में मंगलाराम चौधरी के यहां ३० जुलाई १९२७ को हुआ। राजस्थान में भी उन्हें विभिन्न मंत्रीमंडलों में स्थान मिला है।

श्री ओला के इस शानदार जीत पर सम्मेलन परिवार उन्हें हार्दिक बधाई देता है।

कोलकाता : श्री चम्पालाल सरावगी के दाम्पत्य जीवन की स्वर्ण जयन्ती मनाई गई

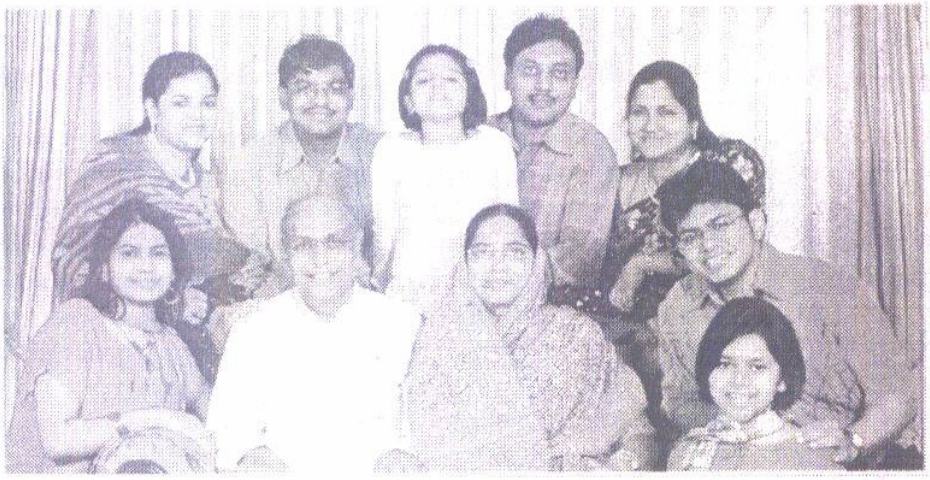

सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं कर्मयोगी श्री चम्पालालजी सरावगी के सफल दाम्पत्य के स्वर्णिम ५० वर्ष के शुभ अवसर पर

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन परिवार के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका द्वारा हार्दिक बधाई एवं स्वस्थ दीर्घायु की शुभकामनाएं भेजी गईं।

चुरू : डॉ. चांदकौर जोशी व श्रीमती कविता किरण को राजस्थानी महिला साहित्य पुरस्कार

भारतीय साहित्य विकास न्यास, रांची की ओर से राजस्थानी महिला साहित्यकार डॉ. चांदकौर जोशी (जोधपुर) को उनके कहानी संग्रह 'साचौ सुपनौ' तथा श्रीमती कविता किरण (फालना-पाली) को उनके राजस्थानी गजल संग्रह 'बखत री बातां' के लिए चुरू में एक समारोह में सम्मानित किया गया। राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति एकादमी के सदस्य श्री भंवरसिंह सामौर ने समारोह की अध्यक्षता की और भारतीय साहित्य विकास न्यास के प्रतिनिधि श्री विनोद अग्रवाल एवं श्रीमती उषा अग्रवाल ने न्यास की ओर से पुरस्कार प्रदान किये। राजस्थानी भाषा की महिला साहित्यकारों को प्रोत्साहन करने के लिए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं समाजसेवी श्री हनुमान सरावगी ने अपनी मातुश्री स्व. श्रीमती गोदावरी देवी सरावगी की स्मृति में श्रीमती गोदावरी देवी सरावगी राजस्थानी महिला साहित्य सम्मान पुरस्कार की स्थापना की है। इसके तहत ५१००-५१०० रुपये, शाल, श्रीफल और मानपत्र प्रदान कर सम्मानित किया जाता है।

श्रद्धांजलि

कोलकाता : लालचन्द बगड़िया का देहावसान

निष्काम कर्मयोगी, कर्मठ समाज सेवी, धर्म परायण, विभिन्न सेवा समिति के संस्थापक भारत में पूर्ण विख्यात एक्यूप्रेशर शिरोमणि लालचंद बगड़िया का दिनांक १५ अप्रैल २००४ को रांची में सेवा कार्य करते-करते असमय व आकस्मिक परलोक गमन हो गया हैं। स्थानीय सेवा संस्थाओं एवं समाज सेवियों द्वारा २४ अप्रैल २००४ को स्थानीय कुम्हारटोली सेवा समिति के सेवा स्थल में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। आयोजन की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं पत्रकार श्री विश्वम्भर नेवर ने की।

कोलकाता : श्री पुरुषोत्तमदास हलवासिया पंचतत्व में विलीन हुए

शिक्षा, साहित्य, चिकित्सा तथा अन्य लोक कल्याणकारी संस्थाओं के स्थापितकर्त्ता एवं ऐसी अनेक संस्थाओं से

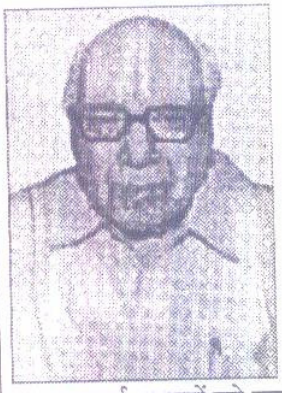

घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध लोकप्रिय समाज सेवी एवं चिन्तक स्व पुरुषोत्तमदास हलवासिया की पावन स्मृति में एक महती श्रद्धांजलि सभा का आयोजन कोलकाता महानगर की विविध साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थानों की ओर से दिनांक १६ मई २००४ को स्थानीय श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय कक्ष में किया गया। इस अवसर पर शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, समाज सेवा, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में कार्यरत ५० से अधिक प्रतिष्ठित संस्थाओं के पदाधिकारियों ने अपने श्रद्धांजलि स्वर में स्व. पुरुषोत्तमदास हलवासिया को निष्काम कर्मयोगी, गीता के सच्चे उपासक, राष्ट्रवादी विचारधारा के प्रबल पक्षधर, सच्चे लोकतंत्रवादी, अनेकानेक सामाजिक शैक्षिक एवं साहित्यिक संस्थाओं के संस्थापक एवं विकासोन्मुख कारक बताया। संकल्पित कार्य को पूरी निष्ठा से सम्पन्न करने की उनकी तत्परता उनके मित्रों सहयोगियों को सदैव प्रेरित करती थी। हिन्दी भाषा एवं संस्कृति के उन्नयन में उनकी भूमिका सदा अविस्मरणीय रहेगी। इन भावपूर्ण उदगारों को व्यक्त करने वालों में प्रमुख थे सर्वश्री नन्दकिशोर जालान, परमानन्द चूड़ीवाल, वेणुगोपाल बांगड़, विश्वम्भर नेवर, कालीदास बसु, महावीर नार सरिया, केशवराव दीक्षित, विमल लाठ, रामाधीन शर्मा 'वशिष्ठ', वंशीलाल सोनी, नेमचंद कंदोई, सुशील ओझा, आत्माराम काजड़िया, राधेश्याम सोनी, घनश्यामदास सुगला आदि। श्रद्धांजलि सभा के अध्यक्ष श्री घनश्याम बेरीवाल ने कहा कि उनके अधूरे कार्य को पूरा करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। कार्यक्रम का संचालन श्री जुगल किशोर जैथलिया ने किया। डा. उषा द्विवेदी ने शोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया। उल्लेखनीय है कि श्री पुरुषोत्तमदास हलवासिया का स्वर्गारोहण १० मई २००४ को हो गया।●

मारवाड़ी समाज के प्रथम महामण्डलेश्वर का आशीष प्रवचन

सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान महामण्डलेश्वर स्वामी बालकानन्दजी से आशीर्वाद स्वरूप प्रसाद ग्रहण करते हुए।

मारवाड़ी समाज के प्रथम महामण्डलेश्वर अनन्त विभूषित श्री श्री १००८ स्वामी श्री बालकानन्द गिरीजी महाराज ने पिछले शनिवार दिनांक १५ मई २००४ को सम्मेलन के संयुक्त महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार के कोलकाता निवास स्थान पर समाज के धार्मिक मूल्यों पर अपने विचार व्यक्त किये, साथ ही मारवाड़ियों को एकता, संगठन बनाकर काम करने को कहा। स्वामीजी ने कई उदाहरणों सहित धर्म के महत्व पर प्रकाश डाला।

स्वामीजी जन्म से ही अपने गुरु की देख रेख में एम.बी.बी.एस., आई.ए.एस. आदि उच्च शिक्षा प्राप्त कर अल्प आयु में महामण्डलेश्वर चुने गये। बड़ी खुशी की बात है कि आप जगद्गुरु शंकराचार्य चुन लिये गये हैं और अब विदेश यात्रा पर हिन्दू धर्म का प्रचार-प्रसार करने के लिए प्रस्थान करेंगे। सन् २००८ में स्वामीजी का अभिषेक आगामी कुम्भ

मारवाड़ी समाज के प्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी श्री बालकानन्द जी महाराज अपना आशीष प्रवचन देते हुए। उपस्थित हैं सर्वश्री मोहनलाल तुलस्यान, उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, महामंत्री भानीराम सुरेका, संयुक्त महामंत्री रामअवतार पोद्दार, ओमप्रकाश अग्रवाल, रवीन्द्र कुमार लड्ढा, विश्वनाथ सुरेका, अनिल पोद्दार, ललित पोद्दार आदि।

अपने भक्तवृन्दों की विशाल उपस्थिति में शिविर का उद्घाटन करते हुए महामण्डलेश्वर स्वामी श्री बालकानंद गिरीजी महाराज।

मेले में होगा, तब आप जगद्गुरु शंकराचार्य की गद्दी संभालेंगे। स्वामीजी हरीधाम सनातन सेवा ट्रस्ट हरिद्वार के संचालक ट्रस्टी हैं। इस प्लेटफार्म के जरिये अनेक धार्मिक कार्यों के अलावा, स्कूल, मन्दिर चला रहे हैं। इस अनुष्ठान में सम्मेलन के अध्यक्ष सर्वश्री मोहनलाल तुलस्यान, उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, महामंत्री भानीराम सुरेका, संयुक्त महामंत्री रामअवतार पोद्दार, ओमप्रकाश अग्रवाल, रवीन्द्र कुमार लड़िया, विश्वनाथ सुरेका, अनिल पोद्दार, ललित पोद्दार, बिमल पोद्दार, राजेश पोद्दार, संजय पोद्दार, मयूर पोद्दार, डा. पुरुषोत्तम खेतान, किशोरी लाल पोद्दार आदि सम्मिलित थे।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका व संयुक्त महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार अपने परिवार व अन्य सदस्यों के साथ उज्जैन के कुम्भ मेले में नींबू शिकंजी का एक विशाल शिविर स्वामीजी के सान्निध्य में इनके आशीर्वाद से लगाया था जिसका उद्घाटन स्वामीजी के कर-कमलों से किया गया। इस अवसर पर उनके अनेक भक्तगण उपस्थित थे।

अपने भक्तवृन्दों एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन तथा हरिधाम सनातन सेवा ट्रस्ट के पदाधिकारियों के साथ स्वामी श्री बालकानंद जी।

From :
All India Marwari Federation
152B, M.G. Road, Kolkata-7
Phone : 2268-0319

To,